जुलाई-२०२५ ◆ वर्ष १४ ◆ अंक ०३ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
जुलाई-2025

टूट पड़ो अपने दुश्मन पर,
किंचित सम्भल न पाए
सत्यार्थप्रकाश में युद्धनीति के,
ऐसे गुर बतलाए ||

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १६५

24 Carat

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH

मसाले

सेहत के रखवाले

असली मसाले सच - सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर

खाता संख्या : 310102010041518

IFSC CODE- UBIN 0531014

MICR CODE- 313026001

में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२६
आषाढ़ शुक्ल द्वादशी
विक्रम संवत्
२०८२
दयानन्दाब्द
२०१

July - 2025

समाचार २५

हलचल २६

०४ एक और भामाशाह

०६ अपने उद्धार के लिए करें परोपकार

०७ वेद सुधा

०८ सार्वदेशिक सभा की चेतावनी

०९ समझें तो आर्य समाज है क्या?

१२ क्रान्ति की हुंकार

१७ हमें गर्व है जिन पर

२० अखण्ड आर्यावर्त्त एक लिपि

२२ स्वास्थ्य- कोलेस्ट्रॉल (आयुर्वेदिक चिकित्सा)

२४ कहानी दयानन्द की

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १४ अंक -०३

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

एक और भामाशाह : न्यास के मुख्य संरक्षक

महाशय राजीव गुलाटी

वेद का मंत्र है '**अनुव्रतः पितुः पुत्रो**' अर्थात् पुत्र संज्ञा उसी की सार्थक है जो अपने पिता के व्रतों का अनुव्रती हो। पिता के भौतिक शरीर के न रहने पर ऐसा अनुवर्ती पुत्र ही पिता के यशः शरीर को वर्षों जीवित रखने में समर्थ होता है। सम्भवतः यही किसी भी पुत्र द्वारा अपने पिता को सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि हो सकती है।

धर्म अनुप्राणित पिता से,
पुत्र को ऐसी पुण्य विरासत मिली है।
जिसके केन्द्र में केवल,
परोपकार अवस्थित है।

जी हाँ ये पिता हैं पद्मभूषण महाशय धर्मपाल गुलाटी जिन्होंने पुरुषार्थ से संचित अपनी पुण्य कमाई को माँ मानवता की सेवा में समर्पित कर दिया। महान् याज्ञिक पूज्य महाशय जी ने यज्ञ की सच्ची भावना को जीवन में स्थान दिया, साथ ही महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी होने के नाते आर्यसमाज के अनगिनत प्रकल्पों को पुष्पित व पल्लवित किया।

पूज्य महाशय धर्मपाल जी ने जब इस नश्वर शरीर को त्यागा तब जहाँ उद्योग जगत् में प्रश्न था कि क्या पूज्य महाशय जी के बाद भी एम.डी.एच. का साम्राज्य उसी सोपान पर अवस्थित रहेगा? तो धर्मानुराग में संलग्न लोगों के मन में था कि क्या महाशय जी की पुण्य उदार परम्परा एवं उदार अर्थ सरिता को प्रवहमान रखने की भावना का संचार अगली पीढ़ी में होगा? इन दोनों को सकारात्मक उत्तर मिला अनुव्रती पुत्र महाशय राजीव गुलाटी जी द्वारा। जहाँ एक ओर व्यापार के क्षेत्र में महाशय राजीव गुलाटी ने नव सोपानों को स्पर्श किया वहीं दान सरिता का प्रवाह भी एम.डी.एच. हाउस से नहीं रुकने दिया। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि पुत्र पिता की अन्तश्चेतना, पिता के आदर्शों को और भी अधिक विस्तार दे रहे हैं। आर्य संस्थाओं की वाटिकाओं में लगे पुष्प इस अविरल दान सरिता से खिल उठे हैं। और ऐसा क्यों न हो, पिता भी याज्ञिक पुत्र भी याज्ञिक।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास का क्या ही सौभाग्य है कि जहाँ पूज्य महाशय धर्मपाल जी ने न्यास के अध्यक्ष पद को आजीवन सुशोभित करते हुए इसे नव ऊर्जा से ओतप्रोत कर दिया, वहीं महाशय राजीव जी गुलाटी ने मुख्य संरक्षक के रूप में न्यास का मार्गदर्शन करने का दायित्व स्वीकार कर अपना वरद् हस्त प्रदान कर दिया है। न्यास के सभी न्यासी महाशय राजीव गुलाटी जी की इस उदारता के प्रति हृदय के अन्तःस्थल से कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

MDH मसाले

महाशय राजीव गुलाटी के नेतृत्व में विरासत जारी है

हमारे मुख्य संरक्षक श्री राजीव गुलाटी का परिचय

श्री परमजीत खन्ना जी की कलम से

एमडीएच, भारतीय मसाला उद्योग में एक प्रतिष्ठित ब्राण्ड है, जो दिसम्बर २०२० में अपने पिता महाशय धर्मपाल गुलाटी के निधन के बाद महाशय राजीव गुलाटी के नेतृत्व में एक नए युग में प्रवेश कर रहा है। अपने यादगार विज्ञापन और मजबूत बाजार उपस्थिति के लिए जाना जाने वाला यह ब्राण्ड एक सदी से भी अधिक समय से भारतीय घरों में प्रमुख स्थान रखता है। महाशय धर्मपाल, जिन्हें अकसर **'मसालों का राजा'** कहा जाता है और जिन्हें **'एम.डी.एच. दादाजी'** के नाम से याद किया जाता है, कम्पनी के उत्पाद पैकेजिंग और इसके विज्ञापनों में एक जाना-पहचाना चेहरा थे। महाशय राजीव गुलाटी, अपने पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए, उत्तरी अमेरिका, यूरोप, सुदुर पूर्व, जापान, मध्य पूर्व, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और यू.के. सहित वैश्विक बाजारों में एमडीएच के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उनका योगदान विशेष रूप से शारजाह में एमडीएच की नई विनिर्माण इकाई और यू.के. में ट्रेडिंग कार्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण रहा है।

जबकि महाशय धर्मपाल की प्रतिष्ठित छवि एमडीएच मसाला बक्सों की शोभा बढ़ा रही है, महाशय राजीव गुलाटी ब्राण्ड के नवीनतम विज्ञापनों में प्रतीकात्मक रूप से अपने पिता की याद दिलाने वाली पगड़ी और मूंछें पहने हुए उभरने लगे हैं। यह एमडीएच के लिए एक नए युग में विरासत की निरन्तरता का प्रतीक है। एमडीएच में अपनी भूमिका के साथ-साथ, महाशय राजीव गुलाटी 'ऑर प्योर फूड्स, सुपर डेलीकेज प्राइवेट लिमिटेड' और अन्य कम्पनियों के निदेशक के रूप में भी पद सम्भाल रहे हैं। इन पदों के अतिरिक्त महाशय राजीव गुलाटी निम्नलिखित आर्य समाज के मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध संगठनों में प्रतिष्ठित स्थान पर हैं-

१. अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक ट्रस्ट, अजमेर
२. मुख्य संरक्षक, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश ट्रस्ट, उदयपुर
३. अध्यक्ष, महाशय धर्मपाल चैरिटेबल ट्रस्ट
४. अध्यक्ष, महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट
५. अध्यक्ष, मेसर्स परफेक्ट एजुकेशनल सोसायटी, द्वारका

ये संस्थाएँ मुख्य रूप से अस्पताल, स्कूल, गौशाला, वैदिक शोध केन्द्र, वैदिक सांस्कृतिक केन्द्र, वृद्धाश्रम, अनाथालय, गरीबों को सहायता आदि जैसी अनेक गतिविधियों में विशुद्ध रूप से धर्मार्थ आधार पर लगी हुई हैं।

महाशय राजीव गुलाटी एक बेहद आकर्षक व्यक्तित्व और परोपकारी उपक्रमों के लिए उदार हृदय रखते हैं और समय-समय पर समाज के गरीब, जरूरतमन्दों और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।

महाशय राजीव गुलाटी एवं
माननीया श्रीमती ज्योति गुलाटी जी यज्ञ करते हुए

अपने उद्धार के लिए करें परोपकार

अपने भले की बात सोचना, अपनी भलाई के लिए चेष्टा करना, अपना व अपने परिवार का भरण-पोषण करना जरूरी है, ऐसा होना ही चाहिए। मगर मेरे ख्याल में यदि हमारा पूरा मनन-चिन्तन, पूरा संघर्ष खुद तक और अपने परिवार तक ही सिमटकर रह जाए, तो इससे भी जिन्दगी का असली मकसद पूरा नहीं हो पाता। मानव शरीर जो हमें मिला है, उसका असली मकसद तब पूरा हो पाता है, जब इस क्षणभंगुर शरीर के साथ-साथ समाज की भलाई के लिए, समाज की खुशहाली के लिए भी जो कुछ बन सके, किया जाए। जो इंसान स्वार्थ के दायरे में ही उलझकर रह जाता है, वह चाहकर भी मोह-माया के जाल से छुटकारा नहीं पाता और सन्तों-सद्ग्रन्थों के मुताबिक यही सांसारिक बन्धन है, जिसकी वजह से बार-बार जन्म लेना पड़ता है, गर्भवास का असहनीय दुःख भोगना पड़ता है। दूसरी बात, ऐसा इंसान जब यहाँ से जाता है, तो बहुत जल्दी उसकी पहचान भी खत्म हो जाती है।

दूसरी ओर जो घर-गृहस्थी चलाते हुए दूसरों के सुख-दुःख की भी फिक्र करता है, अपनी सामर्थ्य के मुताबिक तन-मन-धन से दूसरों को सुख पहुँचाता है, उसका उद्धार हो जाता है। माया-मोह का जाल उसे उलझा नहीं पाता, वह आवागमन के बन्धन से मुक्त हो जाता है। इसके साथ ही संसार में भी उसे लम्बे समय तक लोग याद रखते हैं, उसकी कीर्ति बनी रहती है।

मेरे कहने का मतलब यह है कि संसार में कीर्ति और यहाँ से विदा लेने के बाद सद्गति-ये दोनों ही लाभ परोपकार से सुलभ हो जाते हैं। इसलिए हमें एक सच्चे मानव का फर्ज अदा करते हुए दूसरों को हमेशा सुख पहुँचाने की चेष्टा करनी चाहिए, समाज को सुखी बनाने में अपना पूरा योगदान देना चाहिए। मैंने भी तरक्की के लिए भरपूर कोशिश की, काफी हद तक उसमें कामयाब भी रहा। मगर इसे मैं अपने ऊपर माता-पिता एवं परमात्मा की कृपा ही कहूँगा कि स्वार्थ के दलदल में नहीं फंसा, जितना कुछ बन सका, परमार्थ भाव से मैंने खुशी-खुशी न्योछावर किया।

जो लोग मेरे साथ बहुत ही गहरा लगाव रखते हैं। उसका अन्दाजा लगाना आसान है। यह मूल वजह सम्भवतः मेरा परमार्थ भाव ही है, समाज सेवा के क्षेत्र में एमडीएच परिवार का महत्वपूर्ण योगदान ही है, जिससे लोग हमारे साथ हमेशा जुड़े रहना पसन्द करते हैं।

हमें एक सच्चे मानव का फर्ज अदा करते हुए दूसरों को हमेशा सुख पहुँचाने की चेष्टा करनी चाहिए, समाज को सुखी बनाने में अपना पूरा योगदान देना चाहिए। मैंने भी तरक्की के लिए भरपूर कोशिश की, काफी हद तक उसमें कामयाब भी रहा।

शुभाकांक्षी
(राजीव गुलाटी)

ओ३म्

वेद सुधा

प्रभु हमारे भीतर वैदिक सत्य को जाग्रत् कर दें

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद्देवेषु गच्छति।। – ऋग्वेद १/१/४

ऋषि- मधुच्छन्दाः।। **देवता**- अग्निः।। **छन्दः**- गायत्री।।

विनय– हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते हैं और चाहते हैं कि यह यज्ञ सफल हो जाएँ, परन्तु हे देवों के देव अग्निदेव! कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूँकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्यशक्तियों के अर्थात् देवों के द्वारा ही सब कुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वर अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो अवश्य होना चाहिए, पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते हैं कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ संघठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतारू हो जाते हैं। तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता, उन्हें नहीं पहुँचता- सफल नहीं होता। हे प्रभो! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगे और तुझे भूल जाएँ तो प्रकाशक देव! हमारे अन्तरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना; हमारी अन्तरात्मा बोल उठे कि 'हे अग्ने! जिस कुटिलता व हिंसा-रहित यज्ञ को तुम सब ओर से घेर लेते हो, व्याप लेते हो केवल यही यज्ञ देवों में पहुँचता है, अर्थात् दिव्य फल लाता है- सफल होता है।' सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि किसी संगठन-शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के जोर पर कुछ करना चाहेगे तो चाहे कितना घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफलता न मिलेगी।

शब्दार्थ– **अग्ने**= हे परमात्मन्। **त्वम्**= तुम **यम्**= जिस **अध्वरं यज्ञम्**= कुटिलता तथा हिंसा से रहित यज्ञ को **विश्वतः परि भूः असि**= सब ओर से व्याप लेते हो **स इत्**= केवल वही यज्ञ **देवेषु गच्छति**= दिव्य फल लाता है।

लेखक- आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- श्रुति-सौरभ

☞ सार्वदेशिक सभा की चेतावनी ☜

{आर्यसमाज के उपदेशक, भजनोपदेशक तथा कथावाचक कृपया ध्यान दें}

आर्यसमाज विशुद्ध वैदिक विचारधारा का प्रचारक है तथा धर्म और ईश्वर के नाम पर फैले अज्ञान तथा अन्धविश्वास का विरोधी है। हमारे सभी आयोजन वेद, सत्यार्थ प्रकाश, वैदिक सिद्धान्तों, आर्यसमाज की मान्यताओं तथा हमारे स्वर्णिम इतिहास की जानकारियो से पूर्ण होने चाहिये तथा सनातन धर्म के महत्व को समझाने वाले होने चाहिए। इस समय आर्यसमाज की एक भजनोपदेशिका का वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें वह नर्मदा पुराण कथा कर रही हैं। नर्मदा पुराण की पूजा कर रही हैं। थाली में दीप जलाकर आरती की जा रही है। इन्हीं के द्वारा एक अन्य स्थान पर भी शिवजी या अन्य किसी मूर्ति का जलाभिषेक भी कराया गया है। आर्यसमाज को कलंकित करने वाला यह वीडियो अत्यन्त आपत्तिजनक और शर्मसार करने वाला है। कुछ उपदेशक या भजनोपदेशक जिनकी मानसिकता पूरी तरह से व्यवसायिक हो गई है वे इसे विशेष बढ़ावा दे रहे हैं, उन्हें धन की प्राप्ति तो हो जाती है परन्तु उनके इस कृत्य से आर्यसमाज की छवि धूमिल हो रही है। सार्वदेशिक सभा की दृष्टि में यह सर्वथा अवांछित तथा त्याज्य है। अतः आर्यसमाज के सभी उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों को सूचित किया जा रहा है कि आप वेद-भगवान की कथा (वेद-कथा) करना प्रारम्भ करें जिसके अन्तर्गत भगवान राम, भगवान कृष्ण, बाल्मीकि रामायण, गीता, महाभारत तथा अन्य ग्रन्थों की चर्चा भी अच्छी तरह हो सकती है। आर्यसमाज के उपदेशकों, भजनोपदेशकों का कर्तव्य पाखण्ड और अंधविश्वास को मिटाना है न कि उसे बढ़ावा देना है।

आप अपनी शक्ति और समय वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार में लगायें। अन्य प्रकार की कथाएँ और धर्म के नाम पर बहुत से आडम्बर तो सभी स्थानों पर हो रहे हैं। हमें तो वेद की बात करनी है जो कोई नहीं करता। एक आर्यसमाज ही तो है जो वेद को अपना आधार मानकर प्रचार-प्रसार करता है।

इस पत्र के द्वारा आपसे यह अपेक्षा की जा रही है कि आप अपनी कथाओं में वेद-कथा को ही सर्वोच्च प्राथमिकता दें। वाल्मीकि रामायण पर आधारित राम-कथा अथवा योगीराज कृष्ण की कथा करते समय कृपया यह ध्यान रखें कि किसी भी स्थल पर आर्यसमाज के सिद्धान्तों का हनन न हो तथा नृत्य आदि न हों। इसके अतिरिक्त आप अपने भजनों तथा उपदेशों के माध्यम से भी वैदिक मत का प्रचार-प्रसार निरन्तर करते रहें।

भवदीय
सुरेशचन्द्र आर्य
प्रधान, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा-दिल्ली
चलभाष- 9824072509

विशेष सूचनार्थ : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व महामंत्री आदरणीय श्री प्रकाश जी आर्य द्वारा अनेक वेद-कथाएँ की जा चुकी हैं जिनमें काफी बड़ी संख्या में उपस्थिति रहती है। आप वेद-कथा के सम्बन्ध में उनसे परामर्श कर सकते हैं। (चलभाष- **6261186451**)

बालिका आत्मरक्षा एवं चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

माँ शारदा आर्य समिति एवं उदयपुर के समस्त आर्य समाज के तत्वावधान तथा उदयपुर विश्वकर्मा जांगिड़ विकास संस्था के विशेष सहयोग से आयोजित बालिका आत्मरक्षा एवं चरित्र निर्माण शिविर का भव्य समापन २२ जून को सम्पन्न हुआ।

स्थान विश्वकर्मा जांगिड विकास संस्था, उदयपुर (राजस्थान) रहा। इस सात दिवसीय पूर्ण आवासीय शिविर में कुल १११ बालिकाओं ने सक्रिय भागीदारी की। शिविर में आत्मरक्षा के व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ-साथ नैतिक शिक्षा, योगाभ्यास एवं वैदिक जीवन मूल्यों पर आधारित सत्रों का आयोजन किया गया। शिविर की पूरी व्यवस्था उदयपुर आर्य समाज की महिला कार्यकर्त्ताओं द्वारा सम्पन्न की गई, जो नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक प्रेरणादायक पहल रही।

शिविर प्रभारी श्रीमती सरला गुप्ता एवं सहप्रभारी श्रीमती भाग्यश्री शर्मा के कुशल निर्देशन में शिविर सफलता की ऊँचाइयों को छू सका। समापन समारोह में बालिकाओं द्वारा योग, आत्मरक्षा प्रदर्शन एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिन्हें उपस्थितजनों ने सराहा। आयोजकों ने सभी सहयोगियों व प्रशिक्षकों का आभार प्रकट किया।

- श्रीमती सरला गुप्ता, शिविर प्रभारी

समझें तो आर्य समाज है क्या?

'जो उन्नति करना चाहो, तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्य समाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है। क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।'

यह विचार महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में वर्णित किया है। इस विचार में कौन सा ऐसा गुण देश देशान्तर के महापुरुषों ने देखा, जिससे प्रभावित होकर लाला लाजपत राय ने कहा कि- 'आर्य समाज मेरी माता है' नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने कहा- 'संगठन, कार्य, दृढ़ता, उत्साह और समन्वयता की दृष्टि से आर्य समाज की समानता कोई समाज नहीं कर सकता।' चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने कहा कि- 'आर्य समाज ने हिन्दू समाज को भले आदमी के रहने योग्य बनाया।' यदुनाथ सरकार ने कहा कि- 'आर्य समाज एक वास्तविकता है, जिससे जनसाधारण का आश्चर्यजनक उत्थान हुआ है।' लोकमान्य तिलक ने कहा- 'आर्य समाज एक आन्दोलन है।'

अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल ने कहा कि- 'आर्य समाज का सिद्धान्त सार्वभौम है।'

मुन्शी प्रेमचन्द– आर्यसमाज ने साबित कर दिया है कि समाज सेवा ही किसी धर्म के सजीव होने का लक्षण है। हरिजनों के उद्धार में सबसे पहला कदम आर्य समाज ने उठाया, लड़कियों की शिक्षा की जरूरत सबसे पहले उसने समझी, वर्ण व्यवस्था को जन्मगत न मानकर कर्मगत सिद्ध करने का सेहरा उसके सिर है। जातिभेद भाव और खानपान के छूतछात और चौके चूल्हे की बाधाओं को मिटाने का गौरव उसी को प्राप्त है। धर्म के नाम पर किये जाने वाले हजारों अनाचारों की कब्र उसी ने खोदी।

जयशंकर प्रसाद– महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्थापित आर्यसमाज इन सभी संस्थाओं यथा ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, तथा रामकृष्ण मिशन से अग्रणी रहा क्योंकि इसके द्वारा सैद्धान्तिक उपदेशों के स्थान पर रचनात्मक कार्यों को व्यवहार में लाया गया। भारतीय संस्कृति का प्रचार, बाल-विवाह निषेध, विधवा विवाह का समर्थन और गुरुकुलों की स्थापना, आर्यसमाज के प्रमुख कार्य हैं। स्त्री-शिक्षा के लिए आर्य कन्या पाठशालाओं की स्थापना का सर्वोत्तम प्रबन्ध है। स्वामी दयानन्द ने युगनिर्माता की भान्ति देश के सुप्त मस्तिष्क को प्रबुद्ध करने का प्रयत्न किया। उनका 'सत्यार्थ प्रकाश' इस दिशा में निजी महत्व रखता है।

विदेशी विद्वानों में फ्रांस के सुप्रसिद्ध दार्शनिक श्रीयुत्

रोम्याँ रोलाँ ने कहा कि- 'दलित जातियों को समानता के आधार पर आर्य समाज में प्रवेश दिया गया क्योंकि आर्य कोई उपजाति नहीं है।' श्रीमती एनी बेसेंट ने कहा कि- 'आर्य समाज के लिए मेरे हृदय में शुभ इच्छाएँ हैं और उस महान् पुरुष के लिए मेरे हृदय में सच्ची पूजा की भावना है।' श्री एंड्रयू जैक्सन डेविस ने कहा कि- 'प्राचीन आर्य धर्म के अपने पुरातन यथार्थ स्वरूप में संस्थापना यह थी उस भट्टी की आग, जिसे आर्य समाज कहा जाता है। और जो परमात्मा के दिव्य पुत्र दयानन्द सरस्वती के हृदय में प्रदीप्त हुई।'

आर्य समाज के सन्दर्भ में उक्त महापुरुषों ने जो विचार प्रस्तुत किया, इसका कारण और निवारण आर्य जगत् के उद्भट विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी पंडित चमूपति जी के वक्तव्य से स्पष्ट हो जाता है। चमूपति जी ने कहा था कि- 'आर्य समाज के जन्म के समय हिन्दू कोरा फुसफुसिया जीव था। उसके मेरुदंड की हड्डी थी ही नहीं। चाहे कोई उसे गाली दे या उसकी हँसी उड़ाये, उसके देवताओं की भर्त्सना करे या उसके धर्म पर कीचड़ उछाले, जिसे वह सदियों से मानता आ रहा है, फिर भी इन सारे अपमानों के सामने वह दाँत निपोर कर रह जाता था। लोगों को यह उचित शंका हो सकती थी कि यह आदमी भी है या नहीं। इसे आवेश भी चढ़ता है या नहीं। अथवा यह गुस्से में आकर प्रतिपक्षी की ओर घूर भी सकता है या नहीं। किन्तु आर्य समाज के उदय के बाद अविचल उदासीनता की यह मनोवृत्ति सदा के लिए विदा हो गई। हिन्दुओं का धर्म एक बार फिर जगमगा उठा है। आज का हिन्दू अपने धर्म की निन्दा सुनकर चुप नहीं रह सकता। जरूरत हुई तो धर्म रक्षार्थ वह अपने प्राण भी दे सकता है।'

महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के सबसे महान् चिन्तक थे। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना इसी प्रयोजन से की थी कि उस द्वारा संसार का उपकार एवं सब मनुष्यों का हित किया जाए। १९वीं सदी में ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज आदि सुधार के जिन अन्य आन्दोलन का भारत में सूत्रपात हुआ था, उनके क्षेत्र अत्यन्त सीमित रहे। विश्वव्यापी आन्दोलन के स्वरूप की प्राप्ति का तो प्रश्न ही क्या? वह भारत के भी बहुत थोड़े ही प्रदेश तथा जनता के बहुत थोड़े वर्ग को प्रभावित कर सके। लेकिन आर्य समाज ने शीघ्र ही एक जन आन्दोलन का रूप प्राप्त कर लिया। भारत का कोई भी प्रदेश ऐसा नहीं रहा जहाँ आर्य समाजों की स्थापना ना हुई हो। भारत के बाहर अफ्रीका, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, ग्रेट ब्रिटेन, कनाडा, हॉलैंड, सिंगापुर, थाईलैंड आदि कितने ही देशों में आर्य समाज स्थापित हो चुके।

१८७५ ई. को स्वामी जी ने मुम्बई में आर्य समाज रूपी जिस पौधे का आरोपण किया था, वह निरन्तर एक विशाल वट वृक्ष के रूप में वृद्धि करता गया और आज डेढ़ सौ वर्ष हो जाने के बाद भी इसकी हजारों शाखाएँ प्रशाखाएँ विश्व भर में व्याप्त हो गईं।

जिस समय आर्य समाज की स्थापना हुई वह समय १९ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध भारत के इतिहास में नवजागरण का काल है। उस समय जनता सोई हुई थी, बल्कि सच्चाई तो यह है कि जाति जीवनहीन हो चुकी थी। भारतीय जनता में विशेष रूप से हिन्दू जनता में सैकड़ो कुरीतियाँ घर कर गई थी। विद्या का ह्रास हो गया था। अध्ययन, स्वाध्याय के प्रति कोई रुचि ही न रह गई थी। वेद जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों का पठन पाठन लगभग सम्पूर्ण रूप से उठ गया था। पुरुष तो कुछ थोड़ा बहुत पढ़ लेते थे, किन्तु स्त्रियाँ तो सर्वथा अनपढ़ रखी जाती थीं। नारी शिक्षा को विद्वान् लोग भी धर्म विरुद्ध समझते थे। उस समय को देखने पर विश्वास ही नहीं होता था कि यह गार्गी और मैत्रेयी जैसे विदुषी नारियों का देश था। विद्या गई और साथ ही धर्म का उदात्त रूप भी चला गया।

धर्म के नाम पर बड़े स्वार्थी निकृष्ट विचारों का प्रचार होने लगा था। ऋषि मुनियों के नाम से स्वार्थी लोगों ने पुस्तक लिखी और ऋषियों के नाम पर उन्हें छाप दी। इसका फल यह हुआ कि स्वाध्याय, सुविचार और सदाचार की जगह पर जीवन में पतन आने लगा। स्वाध्याय तो बन्द ही था संध्या, यज्ञ इत्यादि भी बन्द हो गए। नई-नई शिक्षाएँ चल पड़ीं। मूर्ति पूजा का प्रचार

हुआ। लोगों को सिखाया गया कि यदि भगवान रीझ जाएँ तो सब कुछ सुलभ कर दें। भगवान को प्रसन्न करने के लिए कितने ढंग निकल गए। कोई सवा सेर लड्डू चढ़ाकर पुत्र प्राप्त करना चाहता था तो कोई सत्यनारायण भगवान की कथा सुनकर अपना मनोरथ सफल कर रहा था। कोई गंगा में डुबकी लगा रहा था। तो कोई गाजी मियां का आशीर्वाद लेने के लिए व्याकुल हो रहा था। इस प्रकार एक ओर तो धर्म में घूसखोरी चल रही थी, और दूसरी ओर आर्य सन्तान राम-कृष्ण के नाम लेवा, पीर पैगंबर और कब्रों की शरण में जाने लगे थे।

हिन्दुओं में वेद शास्त्रों का पढ़ना तो बन्द ही था। सदाचार और धर्म के उच्च रूप को भी स्वार्थियों ने बिगाड़ दिया। छुआछूत का प्रचार हुआ। जाति-पाति के झगड़े बढ़े। जातीय जीवन में निर्बलता आ गई, और हमने अपने महापुरुषों को बदनाम करना आरम्भ कर दिया। और तो और जगत् के अद्वितीय महापुरुष महाभारत के नायक भगवान श्री कृष्ण का परम पुनीत निष्कलंक रूप हमने छोड़ दिया, और बदले में सत्य इतिहास विरुद्ध माखन चोर को अपना लिया। जब भगवान में दुराचारी चरित्र का आरोपण कर दिया गया तो प्रजा सदाचारी कहाँ से रहती? जब देवता घूसखोर बन गए तो जनता में ईमानदारी कहाँ से आवे? हमारी इस दुर्बल स्थिति का लाभ ईसाई और मुसलमान दोनों उठाने लगे। हिन्दू अपनी निर्बलता के कारण मन ही मन पराजित हो गया था। देखते-देखते हिन्दू का धर्म परिवर्तन हो जाता था। वह ईसाई या मुसलमान बन जाता था ।

जिस समय स्वामी दयानन्द सरस्वती जी समाज सुधार का सन्देश लेकर आए उस समय भारतीय जनता की अवस्था अनाथ जैसी हो चली थी। मुसलमान और ईसाई हिन्दुओं को अपने में मिला रहे थे। वेद शास्त्रों की खुलेआम निन्दा हो रही थी। लोग कहते वेद गरड़ियों के गीत हैं। अर्थात् इनमें विद्या बुद्धि की बातें हैं ही नहीं। इस विषम परिस्थिति में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने एक चतुर चिकित्सक की तरह घोषणा की 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनना सब आर्यों का परम धर्म है।' इस घोषणा में समाया हुआ है वेदों का गौरव और मानव मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार। इस घोषणा में उन सारे विरोधियों का मान मर्दन छिपा हुआ है, जो वेदों की निन्दा करते थे। महर्षि दयानन्द ने ईसाई पादरियों और मुसलमान, मौलवियों से शास्त्रार्थ किया और सिद्ध किया कि वेद ज्ञान विज्ञान की पुस्तक है, और उनमें सम्पूर्ण संसार के कल्याण का सन्देश भरा पड़ा है। इस घोषणा का एक और फल निकला स्वामी जी से पूर्व और महाभारत काल के पश्चात् ब्राह्मणों ने वेदों पर ताला लगा दिया था। प्रचार किया जाता था कि वेदों को ब्राह्मणों के अतिरिक्त और कोई नहीं पढ़ सकता। साथ ही पौराणिकों का कहना था कि स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। इस पर स्वामी जी ने समझाया कि यह कपोल कल्पना है। वेद में स्वयं सबको वेद पढ़ने का अधिकार दिया गया है। यजुर्वेद का मंत्र है

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय चस्वाय चारणाय।।

अर्थात् परमात्मा ने मनुष्य मात्र के लिये वेदवाणी का उपदेश दिया। इस वेदाधिकार की घोषणा से एक अद्भुत क्रान्ति का जन्म हुआ। एक ब्राह्मण कुलोत्पन्न संन्यासी ने सहस्राब्दियों के इस अन्याय को मिटाया। वेदों का भाष्य हिन्दी में किया और जनता में वेदों के प्रति, भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा की भावना का उदय हुआ। ऋषि दयानन्द की कृपा से अब किसी का साहस नहीं जो वेदों को गड़रियों के गीत कह सके। ऋषि दयानन्द के सिपाही इस मोर्चे पर जूझने के लिए तैयार हैं। अब वेदों के नाम से भारतीय अपमान का नहीं अभिमान का बोध करते हैं। वेद किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव मात्र के लिए हैं। इसका प्रचार सम्पूर्ण विश्व में करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। **क्रमशः .....**

लेखक- पण्डित संजय सत्यार्थी
आर्योपदेशक, पटना (बिहार), चलभाष- ७७१७७६६१५१

जन्म जयन्ती पर विशेष

क्रान्ति की हुंकार चन्द्रशेखर आजाद

भारत भूमि जो हमेशा से अपनी सभ्यता और संस्कृति के लिए जानी जाती थी। २०वीं सदी में गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी अंग्रेजों का अत्याचार, गरीबी और भुखमरी ने पूरे देश को अपनी गिरफ्त में ले रखा था। हर ओर मायूसी और निराशा का माहौल था। लगता था कि आजादी अब बस एक कभी न पूरा होने वाला सपना बनकर रह जाएगी। ऐसे ही एक अंधेरे और निराशा भरे दौर में, २३ जुलाई, १९०६ को मध्य प्रदेश के भाबरा गाँव (जिसे अब आज़ाद नगर के नाम से जाना जाता है) के एक साधारण, गरीब ब्राह्मण परिवार में एक शिशु ने जन्म लिया, जिसका नाम रखा गया चन्द्रशेखर तिवारी। कौन जानता था कि यह बालक, जिसकी परवरिश संघर्षों के बीच हुई थी, आगे चलकर क्रान्ति की ज्वाला बनेगा और 'आज़ाद' नाम से भारतीय इतिहास के पन्नों में अमर हो जाएगा। उनका जन्म केवल एक घटना नहीं थी, बल्कि भारत के स्वाभिमान की एक पुकार थी, एक ऐसे युग की शुरुआत थी जब देश के नौजवानों ने ठान लिया था कि वे अब गुलामी की साँसें नहीं लेंगे।

चन्द्रशेखर १९२०-२२ के असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। उस समय उनकी आयु मात्र १४ वर्ष थी। गाँधी जी के अहिंसा के सिद्धान्त से प्रेरित होकर उन्होंने वाराणसी में विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया और यहीं पर उन्हें गिरफ्तार किया गया और उन्हें मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। मजिस्ट्रेट ने उनसे पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है तो उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के कहा मेरा नाम 'आजाद' है। तब मजिस्ट्रेट ने उनके पिता का नाम पूछा तो उन्होंने कहा

'स्वतंत्रता' और जब मजिस्ट्रेट ने उनका पता पूछा तो तो उन्होंने बताया कि जेल मेरा पता है। चन्द्रशेखर के इन निर्भीक और व्यंगात्मक जवाबों से मजिस्ट्रेट आग बबूला हो गया और उसने तुरन्त चन्द्रशेखर को १५ कोड़े की सजा सुनाई और जब यह सजा उन्हें दी जा रही थी तब हर एक कोड़े पर चन्द्रशेखर आजाद 'भारत माता की जय' का नारा लगा रहे थे। उनकी

पीठ से खून बह रहा था लेकिन उनके चेहरे पर दर्द का कोई निशान नहीं था बल्कि साहस और दृढ़ संकल्प चमक रहा था। इस घटना ने पूरे वाराणसी में आग लगा दी। लोगों ने चन्द्रशेखर की बहादुरी की दाद दी और उन्हें चन्द्रशेखर आजाद बुलाना शुरू कर दिया। जब चौरी-चौरा काण्ड के बाद महात्मा गाँधी ने अचानक असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया तो आजाद और उनके जैसे कई क्रान्तिकारियों को लगा कि अहिंसा से स्वतंत्रता की प्राप्ति में बहुत समय लगेगा इसलिए उन्होंने ऐसे समूह की तलाश की जो अंग्रेजों को उन्हीं की भाषा में समझाए। इसी दौरान राम प्रसाद बिस्मिल के सम्पर्क में आए। बिस्मिल ने आजाद को १९२४ में स्थापित हुए हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में शामिल किया। दल के लिए जब धन की सख्त आवश्यकता थी तो आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल और अन्य कई क्रान्तिकारी साथियों ने मिलकर लखनऊ के काकोरी स्टेशन के पास ट्रेन को निशाना बनाया। उन्होंने ट्रेन रोककर उस खजाने को लूट लिया। यह घटना ब्रिटिश सरकार के लिए एक बहुत बड़ा झटका था और इसने उन्हें हिला दिया। काकोरी काण्ड के बाद ब्रिटिश सरकार ने क्रान्तिकारियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर धर पकड़ अभियान चलाया। जिसमें राम प्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाकउल्ला खान के साथ कई प्रमुख क्रान्तिकारियों को पकड़ लिया गया और बाद में उन्हें फांसी दे दी गई। पर चन्द्रशेखर पुलिस के हाथ नहीं आए।

काकोरी काण्ड के बाद HRA लगभग बिखर चुका था लेकिन आजाद ने हार नहीं मानी और भगत सिंह और सुखदेव जैसे युवा क्रान्तिकारी के साथ मिलकर लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए जॉन सांडर्स को मारने की योजना बनाई और उसे अंजाम भी दिया।

असेंबली में बम फेंकना यह आजाद की ही योजना थी और इस कार्रवाई का मुख्य उद्देश्य किसी को नुकसान पहुँचाना नहीं था बल्कि ब्रिटिश सरकार के कानों तक अपनी आवाज पहुँचाना था। जिसके लिए चन्द्रशेखर आजाद ने भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को चुना और उन सब ने यह भी तय किया कि बम फेंकने के बाद वह वहाँ से भागेंगे नहीं, आत्मसमर्पण करेंगे ताकि वह अपने विचार अदालत में रख सकें और इंकलाब जिन्दाबाद का नारा पूरे देश तक फैला सके। इस दौरान आजाद ने अपने साथियों को कानूनी सहायता प्रदान करने के लिए गुप्त रूप से धन जुटाया और वकीलों से सम्पर्क किया। आजाद ने जेल में बन्द क्रान्तिकारियों के विचार जनता तक पहुँचाने और उनके प्रति सहानुभूति पैदा करने के लिए प्रचार अभियान भी चलाए।

२७ फरवरी १९३१ को आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में जब अपने एक विश्वासपात्र मित्र सुखदेव राज से मिलने गए थे, उस समय एक मुखबिर की सूचना के चलते ब्रिटिश पुलिस ने पार्क को चारों ओर से घेर लिया। आजाद ने अकेले ही अनेकों पुलिस कर्मियों से बहादुरी से मुकाबला किया और कई को तो घायल कर दिया और अपने साथी को भागने का मौका दिया और जब उनकी पिस्टल में सिर्फ एक गोली बची तो उन्होंने जो प्रतिज्ञा ली थी कि मैं आजाद हूँ आजाद ही रहूँगा और आजाद ही मरूँगा, मैं कभी अंग्रेजों के हाथों जिन्दा नहीं पकड़ा जाऊँगा, को पूरी करते हुए एक गोली से स्वयं को समाप्त कर दिया। इसके बाद भी अंग्रेज उनके पास आने से डर रहे थे। ऐसे हुतात्मा की जन्म जयन्ती पर उनको नमन।

- सिद्धम आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

हमें मनुष्य जन्म वेदधर्म के पालन तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए मिला है

संसार में बहुत कम मनुष्य ऐसे हैं जो अपने जीवन के उद्देश्य पर विचार करते हैं। यदि वह ऐसा करते हैं और उन्हें सौभाग्य से कोई सद्गुरु या सत्साहित्य प्राप्त हो जाये, तो ज्ञात होता है कि हमें हमारा यह जन्म परमात्मा ने हमारे पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर शुभ व अशुभ कर्मों का भोग करने सहित श्रेष्ठ कर्मों व धर्म का पालन करते हुए मोक्ष प्राप्ति के लिये दिया है। वर्तमान समय में देश देशान्तर के लोगों को मत-पन्थों का तो ज्ञान है परन्तु सद्धर्म का ज्ञान नहीं है। संसार में केवल एक ही परमात्मा है जिसने इस संसार को बनाया है। इस संसार को बनाने का कारण भी सृष्टि की तीन अनादि व नित्य सत्ताओं में से एक जीवों को उनके पूर्वजन्मों के कर्मानुसार उनके पाप व पुण्य कर्मों का फल देना होता है। मनुष्य योनि अन्य सब योनियों में श्रेष्ठ व ज्येष्ठ होती है। मनुष्य के पास परमात्मा ने कर्म करने के लिये दो हाथ तथा सोच विचार करने के लिये बुद्धि दी है। मनुष्य के शरीर की रचना भी अन्य सब प्राणियों से अनेक प्रकार से भिन्न व उत्तम है। मनुष्य ही ऐसे प्राणी हैं जो चिन्तन व मनन कर सकते हैं एवं अध्ययन व अध्यापन सहित सत्य व असत्य का विचार कर सत्य का ग्रहण व असत्य का परित्याग कर सकते हैं।

परमात्मा ने कृपा करके सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा आदि ऋषियों को क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान दिया था। यह ज्ञान हमें हमारी आत्मा के सत्यस्वरूप सहित ईश्वर, सृष्टि एवं हमारे कर्तव्यों का बोध कराता है। मनुष्य को वेद वर्णित ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव व स्वरूप को जानकर उसकी स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना अवश्य करनी चाहिये तथा वेद निर्दिष्ट कर्तव्यों का पालन करते हुए वेदों का स्वाध्याय एवं योगाभ्यास कर ईश्वर के साक्षात्कार का प्रयत्न करना चाहिये। मनुष्य को ऐसा करते हुए पाप कर्मों का ज्ञान व उनसे विरक्ति हो जाती है। वह वेद प्रतिपादित उत्तम श्रेष्ठ कर्मों को ही करता है तथा अशुभ व पाप कर्मों का त्याग करता है। ऐसा करते हुए जीवन व्यतीत करने से वह धर्म पालन करते हुए जन्म व मरण से होने वाले सभी दुःखों पर विजय पाकर मोक्ष को प्राप्त होता है। यही जीवन पद्धति सार्थक व उत्तम है। मत-मतान्तरों की शिक्षायें अपूर्ण व अधूरी होने के कारण मनुष्य सत्यधर्म तथा मोक्ष के लिये किये जाने वाले कर्तव्यों व व्यवहारों से सर्वथा अपरिचित ही रहता है। मनुस्मृति में धर्म के जिन दस लक्षणों का विधान मिलता है वैसा मत-मतान्तरों की शिक्षाओं में कहीं एक स्थान पर सुनने व पढ़ने को नहीं मिलता। वेद एवं वैदिक साहित्य का अध्ययन कर मनुष्य धर्म को पूर्णता से जान पाता है और उसे ईश्वर के प्रति अपने उपास्य-उपासक, साध्य-साधक, स्वामी-सेवक सहित व्याप्य-व्यापक सम्बन्धों का ज्ञान भी होता है। वैदिक साहित्य से उपासना व देवयज्ञ अग्निहोत्र सहित पंचमहायज्ञों की सत्य विधि का ज्ञान भी होता है जो मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति कराकर उसके मनुष्य जीवन व उसके उद्देश्य को सफल करती व प्राप्त कराती हैं। अतः

मनुष्य जन्मधारी प्रत्येक जीवात्मा को वेदों का अध्ययन कर वेद एवं वैदिक ऋषियों की शिक्षाओं से लाभ उठाना चाहिये। मत-मतान्तर इसमें बाधक बन रहे हैं जिससे मनुष्यों की हानि हो रही है और वह अनेक प्रकार से धर्म, ईश्वरोपासना व यज्ञादि कर्म करने तथा इनसे होनो वाले लाभों की प्राप्ति से वंचित रह जाते हैं। ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान से हमें विदित होता है कि हम जीवात्मा हैं। हमारा आत्मा सत्य तथा चेतन है। यह एक स्वल्प अणु परिमाण, एकदेशी, ससीम, अल्पज्ञ, शुभाशुभ कर्मों को करने वाला तथा उनके फलों का भोक्ता है। हमारी आत्मा की सत्ता अनादि, नित्य, अमर व अविनाशी है। ईश्वर को जानकर उसकी उपासना व यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों को कर जन्म-मरण के बन्धनों से छूट कर मोक्ष को प्राप्त होता है। जिस मनुष्य को जन्म मिला है यदि उसने वेदों को न जाना तो वह जीवन उत्थान विषयक आवश्यक ज्ञान तथा उसके पालन से होने वाले अनेक लाभों से वंचित रह जाता है। इस कारण उसका मनुष्य जन्म लेना सार्थक नहीं हो पाता। वेदाध्ययन तथा वैदिक ग्रन्थों से हमें ज्ञात होता है कि हम अनादि, नित्य, अमर, अविनाशी, शाश्वत तथा सनातन, चेतन अल्पज्ञ सत्ता हैं। हमें पुण्य कर्मों को

कर सुख प्राप्त करने चाहिये। पूर्व-कृत शुभाशुभ कर्मों का भोग करते हुए मोक्ष के लिये किये जाने वाले कर्मों को भी करके हमें जन्म-मरण से छूट कर मोक्ष को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये। मोक्ष में मनुष्यात्मा को किसी प्रकार का किंचित भी दुःख नहीं होता और मुक्तात्मा हर क्षण ईश्वर के सान्निध्य में सुख व आनन्द का भोग करता है। वह ईश्वर से अनेक शक्तियों को प्राप्त होकर ब्रह्माण्ड में स्वेच्छापूर्वक विचरण करता है और मुक्तात्माओं से मिलता व उनसे वार्तालाप भी करता है। मोक्ष अवस्था में मुक्तात्मा को अपने पूर्वजन्म की स्मृति भी बनी रहती है, ऐसा हमने अधिकारी विद्वानों के उपदेशों से जाना है। यह मोक्ष की अवस्था ही सभी मनुष्यों के लिये प्राप्तव्य है। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में ऋषि दयानन्द ने मनुष्य जन्म एवं मोक्ष विषय पर सारगर्भित अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी विचार प्रस्तुत किये हैं।

मनुष्य को अविद्या व विद्या के सत्यस्वरूप को जानना चाहिये। इस विषय में ऋषि दयानन्द ने सार रूप में बहुत ही उत्तम विचार प्रस्तुत किये हैं। वह कहते हैं जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है। अविद्या का लक्षण बताते हुए वह कहते हैं कि जो अनित्य संसार और देह आदि में नित्य अर्थात् जो कार्य जगत् देखा व सुना जाता है, सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से देवों का यही शरीर सदा रहता है, वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है। वह आगे कहते हैं कि अशुचि अर्थात् मलमय स्त्री आदि के शरीर और मिथ्याभाषण, चोरी आदि अपवित्र में पवित्र बुद्धि रखना, दूसरा अत्यन्त विषयसेवनरूप दुःख में सुख बुद्धि आदि तीसरा, अनात्मा में आत्मबुद्धि करना अविद्या का चौथा भाग है। यह चार प्रकार का विपरीत ज्ञान अविद्या कहलाता है।

इस अविद्या के विपरीत अनित्य में अनित्य और नित्य में नित्य, अपवित्र में अपवित्र और पवित्र में पवित्र, दुःख में दुःख, सुख में सुख, अनात्मा में अनात्मा और आत्मा में आत्मा का ज्ञान होना विद्या है। जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे वह विद्या और जिस से तत्वस्वरूप न जान पड़े अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहाती है। अर्थात् कर्म और उपासना अविद्या इसलिये हैं कि यह बाह्य और अन्तर क्रिया विशेष का नाम हैं, ज्ञानविशेष नहीं। इसी कारण बिना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु दुःख से पार कोई नहीं होता। अर्थात् पवित्र कर्म, पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति और अपवित्र मिथ्याभाषणादि

कर्म पाषाणमूर्ति आदि की उपासना और मिथ्याज्ञान से बन्ध अर्थात् जन्म व मरण होता है।

मुक्ति और बन्ध का वर्णन करते हुए ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि जिस से मनुष्य का छूट जाना हो उस का नाम मुक्ति है। मनुष्य जिससे छूट जाने की इच्छा करते हैं वह दुःख होता है। अतः समस्त दुःखों से छूटने का नाम मुक्ति है। मनुष्य दुःखों से छूट कर किसको प्राप्त होता है, इसका उत्तर है कि वह दुःख से छूट कर सुखों को प्राप्त होता है। दुःखों से छूट कर सुख को प्राप्त होकर मनुष्य सर्वव्यापक ईश्वर में रहता है। मुक्ति व बन्ध किन कारणों से होता है इसका उल्लेख करते हुए ऋषि कहते हैं कि परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्यभाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपातरहित न्याय, धर्म की वृद्धि करने, वेद विधि से परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने, पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सब से उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपातरहित न्याय-धर्मानुसार ही करें। इन साधनों से मुक्ति और इन से विपरीत ईश्वराज्ञाभंग करने आदि काम से बन्ध होता है। मुक्ति से जुड़े अन्य अनेक प्रश्नों व शंकाओं का भी ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश में समाधान किया है। अतः सभी मनुष्यों को सत्यार्थप्रकाश व इसके सातवें से दशम समुल्लास का अध्ययन अवश्य ही करना चाहिये। इस अध्ययन से वह लाभ होगा जो अन्य किसी साधन व उपाय से कदाचित नहीं होता।

मुक्ति व मोक्ष के साधन क्या क्या हैं? इसको जानना भी हमारे लिये आवश्यक है। ऋषि बताते हैं कि जो मनुष्य मुक्ति प्राप्त करना चाहें वह जीवनमुक्त अर्थात् जिन मिथ्याभाषणादि पाप कर्मों का फल दुःख है, उन को छोड़ सुखरूप फल को देने वाले सत्यभाषणादि धर्माचरण अवश्य करे। जो कोई मनुष्य दुःख से छूटना और सुख को प्राप्त होना चाहैं वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करें। क्योंकि दुःख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूल कारण है। इसके साथ ही ऋषि यह भी बताते हैं कि मोक्ष चाहने वाले मुमुक्षुओं को सुखी जनों में मित्रता, दुःखी जनों पर दया, पुण्यात्माओं से हर्षित होना तथा दुष्टात्माओं में न प्रीति और न वैर करना चाहिये। नित्यप्रति न्यून से न्यून दो घण्टे पर्यन्त सभी मुमुक्षु ईश्वर का ध्यान अवश्य करें जिस से भीतर के मन आदि पदार्थ साक्षात हों। ऋषि दयानन्द ने मोक्ष विषय को समस्त वैदिक वांग्मय का अध्ययन कर अत्यन्त सरल व सुबोध शब्दों में सत्यार्थप्रकाश में प्रस्तुत किया है। इस सब वर्णन को इस लेख में प्रस्तुत करना सम्भव नहीं है। अतः सबको सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का अध्ययन अवश्य ही करना चाहिये। यदि इसका अध्ययन नहीं किया तो मनुष्य मुक्ति से तो वंचित होगा ही, उसके ज्ञान से भी वंचित रहेगा। यदि ज्ञान ही प्राप्त कर लें तो यह भी कम बड़ी बात नहीं होगी। न जाने किसी जन्म में यह मनुष्य के काम आये व मुक्ति का लाभ प्राप्त हो सके।

यह सुनिश्चित है कि हमें मनुष्य जन्म परमात्मा से सत्य विद्याओं को प्राप्त होकर आत्मा की उन्नति करने, श्रेष्ठ आचरणों को करने तथा मोक्ष प्राप्ति के लिये ही मिला है। कर्मफल भोग भी मनुष्य जन्म का कारण है। केवल सुखों की प्राप्ति के लिये धर्म का आचरण करना व मुक्ति सुख को भूले रहना, मुक्ति व मोक्ष के समस्त तुच्छ लाभ है। हम सबको मोक्ष के लिये प्रयत्न करने चाहियें और इसके लिए वेद, उपनिषद्, दर्शन और सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये।

- मनमोहन कुमार आर्य, १९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१, चलभाष- ०९४१२९८५११२

हमें गर्व है जिन पर

{महाशय रामचन्द्र}

भूत भूत को दूर भगा दो, हिन्दू बनो उदार।
मित्र! शब्द को मेटो, मिलना भुजा पसार।

मेघजाति के उद्धार में अपना प्राण गंवाकर महाशय रामचन्द्र ने अपना नाम अमर कर लिया है। रियासत जम्मू जिला कठुवा, तहसील हीरानगर में ला. खोजशाह महाजन खजांची के घर में १६ आषाढ़ सम्वत् १९५३ के दिन इनका शुभ जन्म हुआ। इनके ८ छोटे भाई और १ बहन थीं। आप सबसे बड़े थे। आपने मिडिल तक शिक्षा प्राप्त की थी। अपनी श्रेणी में सदा प्रथम रहते थे। रियासत के दफ्तरों की कार्यवाही डोगरी भाषा की जगह उर्दु में हो जाने से खजांची का काम पिता की जगह पुत्र को मिला।

रामचन्द्र की प्रवृत्ति बचपन से धार्मिक थी। अखबार पढ़ने का खूब शौक था। आर्यसमाज की सत्संगति ने उस पर खासा रंग चढ़ा दिया था। खजांची बनने पर उनकी बदली बसोहली हो गई। वहाँ दो वर्ष आर्य समाज की बड़ी सेवा की। पुनः कठुवा आ गये। यहाँ आर्यसमाज का प्रचार करना मौत के मुख में पड़ना था। परन्तु उन्होंने निर्भयता से समाज का काम किया और अछूत जातियों की शुद्धि भी की। इससे विरोध का तूफान मच गया, इस कारण उन्हें १९१८ में साम्बना में तब्दील कर दिया गया। वहाँ जाते ही आर्यसमाज कायम किया। एन्फ्लुऐंजा की देशव्यापी बीमारी में सेवासमिति खोलकर बड़ी सेवा की। राजपूत ब्राह्मणों के विरोध का अकेला मुकाबला करते आर्यसमाज का उत्सव बड़ी सफलता से सम्पन्न किया।

इन्हें कांग्रेस से भी बड़ा प्रेम था, सदा शुद्ध खद्दर पहनते थे। कांग्रेस के सालाना जलसे में ८-९ साल तक जाते रहे। मार्शल लॉ के दिनों में पंजाब की खबरें दूसरे प्रान्तों में गुप्तरीति से भेजते थे। साम्बा में आप 'कौमी सेवक' कहे जाते थे। १९१७ की अमृतसर कांग्रेस में जाने की जब तहसीलदार ने इजाजत न दी तब आपने नौकरी से इस्तीफा दे दिया। उनकी दृढ़ता देखकर तहसीलदार ने उन्हें जाने की आज्ञा दे दी।

१९२२ में साम्बा से अखनूर बदली हो गई। यहाँ के लोग छूतछात के बड़े पक्षपाती थे। मेघजाति से बड़ी घृणा करते थे। रामचन्द्र जी ने उनके उद्धार और उन्नति के लिए एक धनी सज्जन का मकान लेकर मेघ बालकों के लिए पाठशाला खोल दी। यह पाठशाला ही

इनकी महाधनता की नींव थी। तहसील का काम करने के बाद सारा समय मेघों में प्रचार करने में लगाते थे। आधी रात तक पहाड़ी इलाकों में घूमना, उन्हें पढ़ाना, उनके दुःख दर्द में सम्मिलित होना, बीमारों को दवा देना, यह उनका नित्य का काम था। जन्माभिमानी जन मेघ बालकों का पाठशाला में पढ़ाना बर्दाश्त न कर सके, उन्होंने अफसरों को शिकायतें भेजीं। मुसलमानों को उकसाया। व्याख्यानों में विरोध किया। एक बार कुछ लोग रामचन्द्र जी के मकान पर लाठी लेकर चढ़ आये परन्तु पुलिस के पहुँच जाने से दंगा न कर सके। १९२२ की जुलाई में हिन्दू बिरादरी ने आर्यसमाजियों का बाईकाट कर दिया। लगातार चौबीस दिन के बाईकाट बाद रामचन्द्र जी की अनुपस्थिति में आर्यों ने अफसरों के दबाव पर यह समझौता कर लिया कि हिन्दू मुसलमानों की शिकायत को ध्यान में रखते हुए कि मेघ बच्चों के नगर में पढ़ाने से भ्रष्ट होने का डर है, इसलिए बस्तियों से दूर पाठशाला खोली जायेगी। जब रामचन्द्र जी अखनूर वापिस आये और यह समाचार सुना तो मानने से इन्कार कर दिया। गवर्नर, वजीर, वजारत से बहुत दिनों तक इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार होता रहा। रामचन्द्र जी की निःस्वार्थ सेवा से मेघ लोग उन पर मोहित हो गये। सबकी जिह्वा पर उनका नाम था। यह भी महाजन होते हुए भी प्रेमवश अपने को मेघ कहते थे।

इनकी प्रबल इच्छा थी कि पाठशाला का अपना निजी मकान बनाया जाये। इसके लिये उनके श्रद्धावान् भगत मेघपण्डित रूपा और माई मौली ने अपनी खेती की जमीन दे दी। इस पर सरकारी कारिन्दों ने और हिन्दू मुसलमानों ने उन पर बड़ा दबाव डाला। परन्तु वे अपनी बात पर अटल रहे। इसके बाद खजांची जी ने इमारत के लिए अपील छापी। १९२२ में बड़े समारोह से वेदमन्दिर का प्रवेश संस्कार हुआ। सब रुकावटों को पार करके अन्त में पाठशाला खुल गई। इससे मेघों के हौसले बढ़ गये। एक सफलता दूसरी सफलता के लिए भूमि तैयार कर देती है। वीर रामचन्द्र को आस-पास के गाँवों में जमीन के वायदे और पाठशाला खोलने के निमन्त्रण मिलने लग गये। इतने में उन्हें जम्मू में स्थानान्तरित कर दिया गया।

उन्होंने अपने कार्य को पूरा करने के लिए चार मास की अवैतनिक छुट्टी ले ली।

अखनूर से चार मील दूर बटौहड़ा के मेघों ने भी उन्हें बुला भेजा। आप १९७५ वि. तदनुसार ३१ दिसम्बर १९२२ ई. को कुछ आर्यों और विद्यार्थियों के साथ ओ३म् का झण्डा लिये और गीत गाते बटौहड़ा पहुँचे। विरोधी दल उन्हें देख भड़क उठा। उसने इनका अपमान किया। गालियाँ दीं, झण्डा छीन लिया, और हवनकुण्ड तोड़ दिया। इससे उस दिन का कार्यक्रम पूरा न हो सका। सारे इलाके में यह समाचार शीघ्र ही फैल गया। रामचन्द्र जी इस घटना से निराश नहीं हुए। उन्होंने २ माघ (३ जनवरी १९२३) को पाठशाला खोलने का दिन नियत कर दिया।

लाहौर से उपदेशक भी बुला लिया। उधर मेघोद्धार से तप्त हृदय राजपूतों ने रामचन्द्र जी को इसका मूल कारण समझ कर उनके वध का षड्यन्त्र किया। दो माघ १९७६ वि. के दिन दंगल के बहाने उन्होंने लोगों को बुलाया। नियत दिन जम्मू से भी रामचन्द्र, लाला भगतराम, लाला दीनानाथ, लाला अनन्तराम, ओम प्रकाश और सत्यार्थी यह सज्जन बटौहड़ा चले। वह दो मील था। रास्ते में आर्योपदेशक सावनमल जी की पार्टी से मिले। उन्होंने सूचना दी कि स्थिति खतरनाक है। राजपूत भड़के हुए हैं, अतः वापिस

चलना चाहिये।

यह विचार करने पर सब लौट चले। राजपूतों को इनकी वापिसी की सूचना मिलते ही एक भक्कू नामक व्यक्ति की कमान में कुछ मुसलमान गूजर और डेढ़ सौ राजपूतों ने सवार और पैदल दौड़कर पीछे से हल्ला बोल दिया। सबकी जबान पर 'खजांची को मारो' का नारा था। श्री भगतराम जी उनकी रक्षा के लिये बढ़े तो उन पर भी अनगिनत लाठियाँ बरसीं। लाठी की वर्षा से शेष भी नहीं बचे। रामचन्द्र जी को अन्त में वह लोग लोहे के हथियार से जख्मी करके बेहोश छोड़ कर भाग गये।

रामचन्द्र जी को उसी रात राजकीय हस्पताल में पहुँचाया गया। वहाँ छः दिन बेहोश रहकर ८ माघ १९७६ वि. (२० जनवरी १९१३) की रात को ११ बजे यह वीरात्मा २६ वर्ष की आयु में स्वर्ग को प्रयाण कर गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इनकी स्मृति को स्थायी रखने के लिये एक रामचन्द्र स्मारक बनाया है। अछूतों के लिए-

१. उनके लिये निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध करना।
२. अछूतों की सामाजिक उन्नति करके उन्हें सवर्णों के बराबर स्थान प्राप्त कराना।
३. उनमें धर्मप्रचार करवाना।
४. अछूतों के अन्दर आत्मसम्मान के भाव उत्पन्न करना।

रामचन्द्र के नाम पर जहाँ यह महाधन हुए थे यह सभा प्रतिवर्ष एक मेला लगाती है। आर्यसमाज के परिश्रम और महाराजा हरिसिंह जी की उदारता से यह कार्य अब तक जम्मू में हो रहा है। आरम्भ से इसके अधिष्ठाता श्री अनन्तराम जी हैं। जहाँ इनका स्मारक लगा है वहाँ अब कुआँ बन गया है। अखनूर को जाने वाली पक्की सड़क बन गई है। कुछ मकान बन गये हैं सुन्दर बगीचा है। यह नहर के किनारे एक मनोहर स्थान है।

लेखक- स्वामी ओमानन्द जी महाराज

पुस्तक- आर्य समाज के बलिदान, प्रस्तुतकर्त्ता- अमित सिवाहा

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी-बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay BHIM UPI

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफीस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

G Pay BHIM UPI

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

ओ३म् इळा-सरस्वती-मही तिस्रो देवी मयोभुवः।
बर्हि सीदन्तु अस्रिधः॥ - ऋग्वेद १/१३/९

अन्वय– इळा= स्तुति योग्य प्रशसंनीय संस्कृति सरस्वती= वाणी मातृभाषा मही= पूजनीय मातृभूमि तिस्रो-देवी-मयोभुवः= दिव्य गुणों वाली सुखकारिणी तीनों देवियाँ अस्रिधः बर्हि= अहिंसक-हिंसा रहित घर-घर को प्रकाशित करें।

बन्धुओ!

भावार्थ– परोक्ष मातृलिपि ही अपरोक्ष मातृभाषा का और मातृभाषा पूर्व राष्ट्रीय अपरोक्ष संस्कृति परम्परा, व्यवहार का प्रत्यक्ष कराती है। नागरिकों के मानवीय स्वभाव शिक्षा और संस्कारों से प्रेरित परस्पर संस्कृति के आचरण की समानता ही से राष्ट्र की उन्नति और राष्ट्रीय मही/भूमि सीमाओं की सुरक्षा और विस्तार होता है और परस्पर विश्वास से सदा सुरक्षित भी रहता है। हमारी देवनागरी (नन्दी) लिपि, आकार और व्यवहार में पूर्णतयाः वैदिक वैज्ञानिक है। मानवीय धर्म की रक्षक है।

इस प्रकार भाषालिपि, शिक्षा, संस्कार, संस्कृति परस्पर एक-दूसरे के पूरक राष्ट्र के भूत, भविष्य, वर्तमान के आधार हैं। मानवीय दृष्टिकोण जिससे परम्परागत संस्कृति और सृष्टि नियमों के पालनकर्त्ता मानव द्वारा सात्विक विचारों से प्राप्त परस्पर विश्वास ही राष्ट्रोन्नति और सम्पन्नता का आधार है। भूमि पर विश्वास संस्कृति ही राष्ट्र कहा जाता है। राष्ट्रीय सीमा कही जाती है। भौतिक सीमाओं की गुलामी (पराधीनता) गुलामी नहीं, क्योंकि राष्ट्र संस्कृति का आधार, शिक्षा-संस्कार, भाषा-लिपि परिवर्तन ही गुलामी है। जो मानव को मानसिक गुलाम बनाती है, जिसका प्रमाण है संसार में एकमात्र हमारा आर्यावर्त्त (भारत देश) जहाँ हम परमात्मा प्रदत्त वैदिक संस्कृति को छोड़, दूसरों की भाषा, संस्कृति पर गर्व व भरण-पोषण कर रहे हैं।

हम शिक्षा-संस्कार-संस्कृति अर्थों के आचरण भूले, शिक्षा के स्थान पर भौतिक विद्या अध्ययन को ही शिक्षा मान बैठे, जो मात्र साधनों का ही ज्ञान देती है। साधनों में सुख है, शान्ति नहीं। शान्ति आत्म विवेक रूप प्रकाश में मानसिक विश्लेषण से प्राप्त होती है।

महर्षि के कथनानुसार वह 'शिक्षा है, जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियता की बढ़ती होवे, अविद्या दोष छूटे, उसको शिक्षा कहते हैं' जो वेद और वैदिक ऋषि ग्रन्थों के आत्मिक स्वाध्याय और सत्य-असत्य के विश्लेषण से ही प्राप्त होती है। जो लोक में शान्ति और परलोक में मुक्ति प्रदाता भी होती है।

विद्या वह है, 'जिसका स्वरूप ईश्वर से लेकर पृथ्वी पर्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है' उसे विद्या कहते हैं। अर्थात् विद्या वह जो प्रकृति विद्या विस्तार अध्ययन से प्राप्त भौतिक नेत्र रूप है, वह आत्म विवेक प्रकाश शिक्षा बिना अन्धी है। शिक्षाविहीन विद्यावादी का संकल्प विकल्प में, सत्य-असत्य में, धर्म-अधर्म में, न्याय अन्याय में, सदाचार-अनाचार में, परार्थ-स्वार्थ में बदल जाता है क्योंकि विद्या संसार के कण-कण का भौतिक ज्ञान कराती-शिक्षा उसके महत्व को आत्म शान्ति के रूप में प्रकाशित करती है।

आत्मिक वेदकुंजी अष्टाध्यायी श्रुति विवेक ज्ञान द्वारा नेत्रहीन ब्रह्मर्षि विरजानन्द जी, महर्षि दयानन्द सरस्वती को संसार के कल्याण का मार्गदर्शन कराकर अमर हो गये। शिक्षा के अभाव में धन लोलुप्त न्याय-अन्याय में, डॉक्टर जीवन को मृत्यु में बदल रहे हैं। अनेकों भ्रष्टाचारी, चरित्रहीन अन्यायपूर्वक मानवीय संस्कृति को कलंकित कर रहे हैं। शिक्षा-संस्कार बिना मानव हत्यारे यूरेनियम से

विनाशकारी हथियारों द्वारा मानवीय संस्कृति को कलंकित करते रहते हैं। जिसका प्रमाण है हिरोशिमा नागासाकी। इसके विपरीत प्रभु भक्त-मानव हितैषी-संस्कृति रक्षकों ने ताप संस्कार से कोयले को हीरे में, धतूरे को अमृत रूप दिया। यूरेनियम को विद्युत् में बदलकर संसार को प्रकाशित किया है।

शिक्षा संस्कार परम्पराओं से रक्षित संस्कृति ही राष्ट्र की आत्मा है जिसे मातृभाषा, मातृलिपि द्वारा ही रक्षित किया जा सकता है। स्वभाषा, लिपि ही परस्पर प्रेम, विश्वास आत्मिक अभिव्यक्ति का सरल साधन भविष्य का मार्गदर्शन कराती है। बीते परोक्ष भूतकाल की परम्पराओं का प्रत्यक्ष कराती है।

हमारे आर्यावर्त्त में २०० से अधिक भाषा बोली जाती थीं, जिसमें १२५ परोक्ष भाषाओं का प्रत्यक्ष उत्तर भारत (आर्यावर्त्त) में देवनागरी वही दक्षिण में नन्दी कही जाने वाली एक ही लिपि अखण्ड आर्यावर्त्त (भारत) का नेतृत्व अकबर समय तक करती रही। इस कारण आज भी पूर्वानुसार समस्त भारत में एकमात्र देवनागरी (हिन्दी) समझी जाती है, जिसे यवनों की पराधीनता में भी तुलसीदास, रविदास, नानक, कबीर आदि ने क्षत्रिय शक्ति महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी की छाया में बचाये रक्खा।

किन्तु अंग्रेजों की पराधीनता में धन की लूट के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा व लिपि की आँधी में (Divide And Rule) कूटनीतिक फूट से परस्पर विश्वास हानि के कारण शिक्षा, संस्कार, संस्कृति भी खो गयी, पारिवारिक सुख-दुःख बाँटने की प्रेम भावना भी खो गयी।

ऐसे में अखण्ड चक्रवर्ती आर्य राष्ट्र की कल्पना साकार कैसे सम्भव है? आर्यावर्त्त राष्ट्र निर्माण उन्नति के लिए मोहनलाल विष्णु लाल पण्ड्या के प्रश्नोत्तर में महर्षि ने कहा-

'एक धर्म, एक भाषा, एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है, जहाँ भाषा-भाव, भावना में एकता आ जाए, वहाँ सारे सुख एक-एक करके सागर में नदियों की भाँति प्रवेश करने लगते हैं।'

आज आजादी के ७७ वर्षों बाद हमारे अपने भी कूटनीति से सत्ता प्राप्ति के लिए 'जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, आरक्षणवाद, अल्पसंख्यकवाद, आतंकवाद, चरित्रहीनता, ब्लैक मनी, आतंकवाद, रुढ़ियों से प्रजा का शोषण कर रहे हैं।'

ऐसे में क्या राष्ट्रीय शिक्षा, संस्कार, संस्कृति की रक्षा प्रतिमा पूजक, नवीन सनातनी, मन्दिर, मस्जिद, चर्च आदि गुरुडमवादी, राम-रहीम, आशाराम, रामपाल दास, नित्यानन्द आदि मठाधीश करेंगे?

आज भी राष्ट्र पितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' ही राष्ट्र रक्षा हेतु शिक्षा-संस्कार, वैदिक संस्कृति से आर्यावर्त्त की उन्नति में विश्वास रखते हैं। आवश्यकता है वैदिक धर्म प्रेमी आर्य सभासद 'एक लक्ष्य शिक्षा सुधार द्वारा जन-जागरण करके शासक और प्रजा के परस्पर प्रेम और विश्वास को बढ़ाकर ही पुनः चक्रवर्ती आर्यावर्त्त जम्बूदीप सपने को साकार कर सकते हैं।

जय माँ वेद भारती, जय आर्यावर्त्त।

लेखक- ओमानन्द परिव्राजक
चलभाष- ९९२७२०३०९५

कोलेस्ट्रॉल वृद्धि विवेचन एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा

आज के युग में कोलेस्ट्रॉल एक बहुचर्चित पदार्थ है। चिकित्सक, इससे बचने की सलाह देते हैं। आयुर्वेदीय दृष्टिकोण से इस विषय पर विचार करते हैं।

हमारे शरीर में सात धातुएँ हैं।

१. रस २. रक्त ३. मांस ४. मेद ६. अस्थि ५. मज्जा एवं ७. शुक्र।

इन धातुओं से हमारा शरीर बना है और इन धातुओं का निर्माण हमारे द्वारा ग्रहण किए गए आहार से होता है। हम जो भी खाते हैं उनको इन सात धातुओं में परिवर्तित करने का कार्य हमारे शरीर में स्थित अग्नियाँ करती हैं। ये अग्नियाँ आठ प्रकार की होती हैं- एक जठराग्नि व सात धातुओं की सप्त धात्वग्नियाँ। इनमें सबसे मुख्य अग्नि जठराग्नि होती है जो ग्रहण किए भोजन का पाचन कर इस धातु का निर्माण करती है। इसके बाद इस रस धातु का धात्वग्नियों द्वारा पाचन होकर रक्त, मांस, मेद, मज्जा व शुक्र धातु का निर्माण होता है। यदि ये अग्नियाँ सम अवस्था में रहकर आपका कार्य करती रहे तो हमारा शरीर स्वस्थ रहता है और कोई रोग नहीं हो पाता। मन्दाग्नि होने पर सम्यक् पाचन नहीं होने से विकृत कोलेस्ट्रॉल का निर्माण होता है।

सामान्यतः कोलेस्ट्रॉल को चर्बी या वसा कहा जाता है। आयुर्वेद में इस चर्बी को मेद कहते हैं। जब शरीर में मेद धातु की पुष्टि होती है तब रक्त में कोलेस्ट्रॉल वृद्धि की सम्भावना रहती है। धात्वग्निमांद्य से मेद की पुष्टि होती है और धात्वाग्निमांद्य से पूर्व जठराग्निमांद्य होता है। जठराग्निमांद्य से अपक्व आहार रस की उत्पत्ति होती है। इस अपक्व आहार रस को आयुर्वेद में आम रस कहा जाता है। यह आम रस रक्त में मिलकर सम्पूर्ण शरीर में घूमते हुए विकृत होकर कोलेस्ट्रॉल के रूप में धमनियों में जमा हो जाता है और अनेक प्रकार के रोगों को उत्पन्न करता है। अतः इस रोग का मूल कारण जठराग्निमांद्य व धात्वाग्निमांद्य है।

ऐसा नहीं है कि यह वसा (कोलेस्ट्रॉल) शरीर के लिए बहुत हानिकारक है, उचित प्रमाण में यह शरीर के लिए बहुत लाभदायक होता है। इसके बगैर पुरुषत्व व नारीत्व सम्बन्धी हार्मोन नहीं बनते। बच्चे के रक्त में विद्यमान कोलेस्ट्रॉल कोशिका निर्माण के काम आता है। यह मांसपेशी व हृदय के लिए आवश्यक ऊर्जा की प्राप्ति कराता है। शरीर की प्रत्येक जीवित कोशिकाओं का यह आवश्यक तत्व है और इनकी क्रिया के सम्पादन में अपना योगदान देता है। आधुनिक मतानुसार इसके पाँच प्रकार हैं।

१. कोलोमाइक्रोन २. वी.एल.डी.एल. ३. आई.डी.एल. ४. एल.डी.एल ५. एच.डी.एल। इनमें से एच.डी.एल (हाई डेन्सिटी लियो प्रोटीन) को शरीर के लिए अच्छा माना जाता है।

कोलेस्ट्रोल वृद्धि के कारण

जान्तव स्नेह (मांसाहार) का सेवन, वनस्पति घी का सेवन, अति मात्रा में चर्बीयुक्त आहार का सेवन, शारीरिक श्रम की कमी, अनियमित दिनचर्या, फास्टफूड व तले हुए पदार्थों का सेवन, पूर्व में खाये भोजन के पाचन होने से पहले पुनः भोजन ग्रहण करना, खाने के तुरन्त बाद पानी पीना, खाते ही सो जाना, व्यायाम व श्रम की कमी, अधिक मात्रा में भोजन करना, धूम्रपान व तनाव इत्यादि कारणों से अग्निमांद्य होकर आम रस की उत्पत्ति होती है। यह आम रस रक्त के साथ मिलकर धमनियों में कोलेस्ट्रॉल के रूप में जमा होता रहता है। जब इससे हृदय की धमनी में अवरोध होता है तो हृदय रोग, मस्तिष्क की धमनियों में अवरोध होने पर पक्षाघात व अन्य मस्तिष्क सम्बन्धी रोग, हाथ पैर की धमनियों में अवरोध होने पर सन्धिशूल व शोथ, थायराइड, किडनी, अग्न्याशय आदि को रक्त पहुँचाने वाली धमनियों में अवरोध होने पर उनकी कार्यक्षमता घट जाती है।

चिकित्सा

सर्वप्रथम कोलेस्ट्रॉल वृद्धि वाले मनुष्य अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखे। अपनी शारीरिक शक्ति के अनुसार नियमित व्यायाम, योगासन एवं प्राणायाम अवश्य करें। मांसाहार, अण्डा, वनस्पति, घी का सेवन न करें।

मानसिक तनाव से दूर रहें। धूम्रपान, मदिरापान व नशीले पदार्थों का त्याग करें, अतिमात्रा में भोजन न करें। शरीर का वजन नियन्त्रित रखें। कब्ज न होने दें। तले हुए पदार्थ नहीं खावें। प्रमादरहित होकर क्रियाशील रहें। प्रातः सूर्योदय से पूर्व अवश्य घूमने जावें। रात्रि में सूर्यास्त पहले हल्का भोजन करें। मौसम्मी, नीम्बू, छाछ, पपीता, चना, लहसुन, सौंठ आदि द्रव्यों के सेवन से कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित रहता है।

कोलेस्ट्रॉल जमाव की प्रक्रिया व रक्त धमनियों के अवरोध को समाप्त करने के लिए आयुर्वेद में बहुत सी औषधियाँ हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

1. एक पोतिया लहसुन जिसमें एक ही कली होती है, छीला हुआ ५० ग्राम, इन्द्रयव और करंज के बीज २०-२० ग्राम, काला नमक और मण्डूर भस्म दोनों १-१ ग्राम, शुद्ध विष तिन्दुक १० ग्राम, घी में तली तली हुई शुद्ध हींग १५ ग्राम तथा एरण्ड तैल में तली हुई छोटी हरड़ १२ ग्राम लेवें। अब लहसुन के बीच के भाग को चीरकर उसमें स्थित मींगी निकालकर रात्रि को छाछ में भिगोकर रख देवें। सुबह गर्म जल से धोकर साफ कर लें। अब इस लहसुन को खरल में डालकर खूब बारीक रगड़ लें। इसके बाद इसमें हींग डालकर घोटें, तत्पश्चात् अन्य औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण डालें और इसमें ग्वारपाठे का स्वरस डालकर घुटाई करके ५००-५०० मिली ग्राम की गोलियाँ बनावें। २-२ गोली दिन में तीन बार लेने से कोलेस्ट्रॉल कन्ट्रोल होता है। हृदय की दुर्बलता, घबराहट, बेचैनी, हृदयशूल ठीक होकर हृदय शक्तिशाली हो जाता है।

2. अर्जुनक्षीर पाक- अर्जुन चूर्ण २० ग्राम, गाय का दूध १०० ग्राम और जल १०० ग्राम लेकर सबको गर्म करें। दूध मात्र शेष रहने पर नीचे उतार कर इसमें १ ग्राम इलायची का चूर्ण और आवश्यकतानुसार शक्कर मिलाकर घोटें। प्रतिदिन प्रातः इसका सेवन करने से वसा अथवा चर्बी का नाश होता है। हृदय गति व्यवस्थित होती है। हृदयशूल मिटता है। अर्जुन हृदय के लिए सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। इसके माध्यम से अर्जुनारिष्ट बनता है जो प्रायः सभी बड़ी आयुर्वेद औषध निर्माण कम्पनियाँ बनाती हैं। २०-२० मि.ली. अर्जुनारिष्ट तीन बार पीने से भी हृदय के सभी विकारों में लाभ होता है एवं कोलेस्ट्रॉल के नियंत्रण में सहायक होता है।

3. प्रभाकर वटी- २-२ गोली तीन बार शहद के साथ घोटकर सेवन करने से कोलेस्ट्रॉल कन्ट्रोल होता है तथा हृदय के सभी रोग मिटते हैं।

4. गूगल (गुग्गुल)- गुग्गुल उष्ण, रूक्ष और विशद् होने से मेदोहर है, यह मेद से आवृत वायु में विशेष लाभकारी है। यह हृदय के लिए हितकारी, रक्तकणवर्धक, श्वेतकण वर्धक तथा रक्त को शुद्ध करता है। यह शोधहर तथा कफ और कृमि नाशक है। गुग्गुल हृदय रोग विशेषकर हृदयावरोध कारोनरी थ्रोम्बोसिस तथा पाण्डू रोग में विशेष उपयोगी है। शिरा व धमनी अवरोध में यह अच्छा कार्य करता है। आयुर्वेद में गुग्गुल से निर्मित बहुत से योग हैं, आवश्यकतानुसार प्रयोग करें।

इस रोग की आयुर्वेद में अन्य भी बहुत औषधियाँ हैं जैसे पंचकोलादि क्वाथ, पिप्लादि चूर्ण, पुष्करादि चूर्ण, सूंठ्यादि घृत, सौवर्चल घृत, दशमूलारिष्ट, चिन्तामणिरस, हृदयवल्लभ रस आदि। इनको अपने चिकित्सक के परामर्श से सेवन कर लाभ उठावें।

पथ्य- मौसम्मी, पपीता, नीम्बू, छाछ, चना, लहसून, सौंठ, अदरक, काली मिर्च आदि द्रव्यों के सेवन से कोलेस्ट्रॉल वृद्धि में लाभ होता है। इसमें लहसुन का प्रयोग विशेष लाभदायक पाया गया है।

डॉ.वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्साधिकारी
१३, श्री रामनगर, सेक्टर-६, उदयपुर

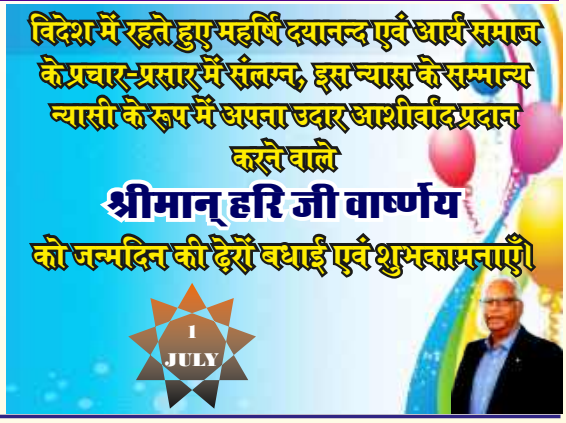

कहानी दयानन्द की

गतांक से आगे.....

कथा सरित

स्वामी दयानन्द कलकत्ता के समाचार पत्रों में

मनुष्य जाति में कोई विभिन्नता नहीं है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।।

कर्मों के द्वारा ब्राह्मण शूद्र होवे और शूद्र भी ब्राह्मण हो जाए, यही पुरानी रीति है। यदि ब्राह्मण दुश्चरित, मूर्ख और धर्महीन हो तो उसे शूद्र बना देना चाहिए और शूद्र यदि ज्ञानी, सच्चरित्र, धार्मिक हो तो उसे ब्राह्मण पद पर प्रतिष्ठित कर देना चाहिए।

उनकी सम्मति में सन्तान पहले माता के पास शिक्षा पाए, पीछे पिता उन्हें शिक्षा देवे। उन्हें भाषा, व्याकरण, धर्मशास्त्र, वेद, दर्शनशास्त्र, पदार्थविद्यादि विषयों की शिक्षा देनी चाहिए। स्त्रियों को भी इसी प्रकार शिक्षा देनी चाहिए। स्त्रियों को इनमें से कई विषयों की विशेष शिक्षा देनी आवश्यक है, जैसे भाषा, शिल्पविद्या, संगीतविद्या और वैद्यक शास्त्र स्त्रियों के लिए विशेष प्रयोजनीय है, क्योंकि स्त्रियों को यह जानना नितान्त आवश्यक है कि किन वस्तु के खाने से शारीरिक पुष्टि और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। वह यह बार-बार कहते हैं कि बाल विवाह ही अनेक पापों का मूल है। विशेष शिक्षा देकर कन्याओं का १६ वर्ष की आयु में विवाह करना अच्छा है। जो स्त्री स्वामी की मृत्यु पर विवाह करना चाहे, उसका विवाह कर देना चाहिए।

दयानन्द परमहंस होते हुए भी पृथिवी के ऐश्वर्य के प्रति विरक्त नहीं हैं। उनका यही विशेष मत है कि गृहस्थ के साथ संन्यासी का कोई प्रभेद नहीं हैं। जो विवाह न करना चाहे उसे ज्ञान व धर्म का प्रचार करना चाहिए। एक स्थान में बैठकर ध्यान धरने मात्र से कोई धार्मिक नहीं हो सकता। यहाँ तक कि वे (लार्ड) नार्थब्रुक से वैदिक विद्यालय स्थापित करने के लिए सहाय्य लेने के अभिलाषी हैं और इसके लिए केशवबाबू से भी अनुरोध करने में उन्होंने त्रुटि नहीं की। वे कहते हैं कि पुरोहित और भट्टाचार्यों ने देश का सर्वनाश कर दिया है। उन्होंने अर्थ के लोभ से सत्य का विलोप कर दिया है और अन्य लोगों को मूर्ख रक्खा है, फलतः वे उन्नीसवीं शताब्दी के अनुपयुक्त हैं। जैसी उनकी बुद्धि की तीक्ष्णता है, वैसा ही उनका बहुशास्त्र दर्शन है। बड़े-बड़े ज्ञानी, मानी, अंग्रेज उनके सामने सहज ही परास्त हो जाते हैं। जड़वादी और संशयवादी उनके महत्त्व और बुद्धि-परिष्कार की क्षमता की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते। फलतः हिन्दू-समाज में ऐसे पुरुष का अभ्युत्थान आश्चर्यकर है, यह कहना पड़ता है।

उनमें विनोद करने की क्षमता बहुत है। तर्कस्थान में वे जो दृष्टान्त देते हैं वे बड़े सुन्दर होते हैं। आश्चर्य का विषय यही है कि वेद के इतने पक्षपाती होते हुए भी वे अद्वैतवादी नहीं हैं। वे कहते है कि शंकराचार्य के शिष्यों ने ही अद्वैतवाद का प्रचार किया है ।

वे वेद के टीकाकार सायणाचार्य को अत्यन्त अग्राह्य कहते हैं। वे कहते हैं कि सायणाचार्य ने ही वेदों के असली अर्थों का लोप कर दिया है। वेद में जो इन्द्र, अग्नि, वरुण प्रभृति शब्द हैं, इसी से लोग मूर्तिपूजा का प्रतिपादन करना चाहते हैं, परन्तु यह अत्यन्त मूर्खता है। इन्द्र परमैश्वर्यवान्, अग्नि पूजनीय, वरुण श्रेष्ठ, यही उनके वास्तविक अर्थ हैं। उस अद्वितीय ईश्वर के सिवाय और कौन परमैश्वर्यवान् हो सकता है, उसके सिवाय और किसके पूजनीय और श्रेष्ठ होने की सम्भावना है। **'इदि परमैश्वर्ये, अगृ गतौ, वृञ् वरणे,'** यही तो इनके प्रकृत धात्वर्थ हैं। वे कहते हैं कि क्या इन शब्दों का प्रकृत अर्थ कभी जड़ पदार्थों में घट सकता है। दयानन्द जिस ढंग से बोलते हैं उससे सबको अवाक् कर देते हैं। इस विषय में हम और अधिक कहना नहीं चाहते। पुराणादि को तो वे सर्वथा अग्राह्य करते हैं। संस्कृत-शास्त्रों का विलोप हो जाने के कारण ये स्थान-स्थान पर संस्कृत पाठशालाओं के स्थापन करने में विशेष प्रयत्नवान् हैं। अब भी उनकी अंग्रेजी पढ़ने की विशेष इच्छा है। **क्रमशः .....**

प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

समाचार

१४ दिवसीय बाल संस्कार शिविर का समापन

आर्य समाज कुन्हाड़ी; कोटा के तत्वाधान में चल रहे १४ दिवसीय बाल संस्कार शिविर का दिनांक ०१ जून २०२५ को समापन हुआ। शिविर में आर्य समाज कुन्हाड़ी के प्रधान श्री पी.सी मित्तल जी के अथक प्रयास से बच्चो को वेद ज्ञान प्रश्नोत्तरी, दैनिक दिनचर्या, नैतिक शिक्षा,

स्वास्थ्य हेतु योगासन, अंधविश्वासों का निवारण व यज्ञ का प्रशिक्षण दिया गया। महिला प्रतिनिधि श्रीमती आर्या ममता शर्मा एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती सरोज मित्तल द्वारा बालक व बालिकाओं को दैनिक प्रातः 'माता पिता के चरण स्पर्श' एवं बड़ो को नमस्ते अभिवादन करने की शिक्षा प्रदान की गई। सभी बच्चों को उत्साहवर्द्धन हेतु महर्षि दयानन्द जी की तस्वीर, प्रमाणपत्र एवं वैदिक साहित्य प्रदान करके पुरस्कृत किया गया। समापन के अवसर पर संस्था के संरक्षक राजेन्द्र सक्सेना के अतिरिक्त राजेन्द्र मुनि, उपप्रधान प्रमोद गुप्ता, मंत्री ब्रह्मप्रकाश वैदिक, सुरेन्द्र राय सक्सेना, रघुनाथ सिंह, महावीर सिंह, लक्ष्मीनारायण, कोषाध्यक्ष सरोज मित्तल, महिला प्रभारी में आर्या ममता शर्मा के अतिरिक्त बच्चों के अभिभावक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम बड़े हर्षो उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ ।

- ब्रह्म प्रकाश आर्य (मंत्री), आर्य समाज कुन्हाड़ी; कोटा

पंचदिवसीय बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी की ओर से आयोजित दिनांक २६ मई से ३० मई तक पंचदिवसीय बाल संस्कार शिविर समाज परिसर में आयोजित किया गया। इसमें ८० बच्चों ने भाग लिया। यह शिविर

शिविरार्थियों को राष्ट्र भक्त, ईश्वर भक्त, मातृ-पितृ भक्त, संस्कारवान बनाने हेतु आयोजित किया गया। शिविर संयोजिका चन्द्रकान्ता वैदिका ने बताया कि शिविर के समापन के अवसर पर डॉ. राजश्री गाँधी मुख्य अतिथि और भँवरलाल आर्य अध्यक्ष रहे। मुख्य वक्ता वेदमित्र आर्य ने स्वास्थ्य वार्ता दी। शिविर में प्रतिदिन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने योग, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास करवाया। इन्द्रप्रकाश वैदिक ने ईश्वर के शुद्ध स्वरूप आदि पर प्रेरक उद्‌बोधन दिया। शिक्षाविद् मीना वागरेचा ने प्रतिदिन आदर्श दैनिक दिनचर्या का सत्र लिया। प्रशिक्षिका बेला सिसोदिया के निर्देशन में पर्यावरण संरक्षण, ढोंगी बाबाओं से बचने, देश भक्ति पर आधारित सामूहिक नृत्य हुए। शकुन्तला गट्टानी ने प्रतिदिन प्रेरक कहानियाँ सुनाई। २९ मई को सभी शिविरार्थियों को गुलाब बाग स्थित नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का अवलोकन करवाया गया। प्रतिदिन यज्ञ में गायत्री महामंत्र से आहुतियों के साथ आरम्भ शिविर के दौरान वैदिक मंत्रों, श्लोकों और प्रार्थना आदि का अभ्यास भी करवाया गया। आर्य समाज हिरण मगरी के कोषाध्यक्ष रमेश चन्द्र जायसवाल, प्रीति चौहान, हजारीलाल आर्य, मुकेश पाठक, निरंजन नेभनानी, अलका जैन आदि ने शिविर में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संचालन समाज के प्रचार मंत्री डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

- डॉ भूपेंद्र शर्मा; प्रचार मंत्री, आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर

सभी आर्यजनों के सहयोग एवं सत्प्रेरणा से पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी (संस्थापक, गुरुकुल पौन्धा देहरादून) के मार्ग-दर्शन व अध्यक्षता में श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा, देहरादून का रजत जयन्ती समारोह निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

ईश्वर की कृपा से इस सफल-सुफल आयोजन के मूल में पूज्य संन्यासीवृन्द, वैदिक विद्वज्जन, आचार्यगण, भजनोपदेशक, गणमान्य गुरुकुल प्रेमी श्रद्धालुजनों के आशीर्वाद, गुरुकुलानुरागी सहयोगियों के सहयोग एवं गुरुकुल के समस्त स्नातक व ब्रह्मचारियों का अनथक पुरुषार्थ तथा पाण्डाल निर्माण, पाचक (हलवाई), आवास-निवास की व्यवस्था प्रदान करने वाले क्षेत्रीय सहयोगियों, वाहन व्यवस्था, प्रचार-प्रसार एवं जन-धन संग्रह आदि कार्यक्रम से पूर्व हुई तैयारियों में सहयोग करने वाले सभी आर्यसज्जनों का महनीय योगदान है।

कार्यक्रम की सफलता आप गुरुकुल प्रेमी महानुभाव की गरिमामयी उपस्थिति पर निर्भर करती है, जिसे आप सभी ने सशरीर तथा आभासीय (वर्चुअल) माध्यम से पूर्ण की। तथा किन्हीं कारणों से यह सम्भव न रहा तब भी आपका मन तो निश्चित रूप से यही पर रहा है, यह कार्यक्रम के सफलता की घोषणा करता है।

मानव सुलभ व्यवहार व वैचारिक चिन्तन की न्यूनता से कार्यक्रम में न्यूनताएँ अवश्य रही होंगी, उन न्यूनताओं को आप सभी ने सहजभाव से दूर कर आपने हम पर विशेष अनुग्रह रखा, इसके लिए धन्यवाद शब्द अपूर्ण है।

इस समारोह में जो कुछ मन-भावन हो सका वह सब आप सभी की शुभकामनाओं व शुभाषीश का ही परिणाम है।

हम सभी गुरुकुल परिवार के सदस्य ईश्वर को स्मरण करते हुए अन्तःस्थल से आप सभी का बारम्बार आभार व्यक्त करते हैं।

- आचार्य डॉ. धनंजय

हलचल

साहस और समर्पण की मिसाल

आज के समय में अपने कर्तव्य के प्रति इतनी श्रद्धा और समर्पण प्रायः देखने में नहीं आता। परन्तु जब ऐसे उदाहरण सामने आते हैं तो उन्हें

साधुवाद देने से आप अपने आप को रोक नहीं सकते। जी हाँ! मैं बात कर रहा हूँ श्रीमती सरला गुप्ता पुरोहित आर्य समाज एवं उनके पति श्री राजकुमार गुप्ता की। कुछ ही दिन पहले की बात है लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर दूर एक गाँव से उनके पास निवेदन आया कि प्रातःकाल ५:०० बजे उनकी पुत्री का विवाह संस्कार सम्पन्न करना है। पूरे गाँव में यह अकेला आर्य समाजी परिवार है। इतनी दूर प्रातः ५:०० बजे पहुँचना सम्भव नहीं, यह सोचकर गुप्ता दम्पति रात को ही ७:०० बजे अपने घर से चल दिए ताकि रात्रि में गन्तव्य पर पहुँचकर प्रातःकाल दिए हुए समय पर संस्कार प्रारम्भ करा सके। अभी एक घण्टा भी नहीं बीता था कि आपकी कार को किसी ने पीछे से टक्कर मार दी। उसके बाद एक ट्राले ने उसको घसीटा और उनकी कार ५-६ पलटिया खा गई। कार की जो दुर्गति हुई वह ऐसे एक्सीडेंट में स्वाभाविक थी। सब कांच वगैरा टूट गए। परन्तु ईश्वर की कृपा देखिए गुप्ता दम्पति को खरोंच भी नहीं आई। आसपास के कुछ लड़के आ गए और उनको बाहर निकाला और सहारा दिया। मौत के मुँह में से बचने के बाद शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो अपने घर वापस न जाना चाहे, परन्तु गुप्ता दम्पति ने कर्तव्य को ऊपर रखा। उन लड़कों से कहा कि हमें एक टैक्सी करा दीजिए और उस टैक्सी के द्वारा आप सही समय पर उस गाँव में पहुँच गए और वहाँ संस्कार विधिवत् सम्पन्न कराया। श्रीमती सरला गुप्ता ने पति के अवकाश ग्रहण के पश्चात् पौरोहित्य का प्रशिक्षण लेकर संस्कार कराने प्रारम्भ किये। ५० से अधिक अन्त्येष्टि संस्कार इन्होंने बिना किसी दक्षिणा के सम्पन्न कराए। दूर-दूर से भी इनको संस्कार कराने के लिए आजकल बुलाया जाता है। यह सब तो ठीक है परन्तु मृत्यु के मुख में जाकर बाल-बाल बचने के बाद भी अगर यह हिम्मत कोई करता है कि गन्तव्य पर पहुँच कर अपना कर्तव्य कर्म निष्पादित करें तो निःसन्देह ऐसा साहस ऐसी कर्तव्य निष्ठा नमन की पात्र है। हम गुप्ता दम्पति के आर्य समाज के कार्यों के प्रति इस प्रतिबद्धता को नमन करते हैं।

खो दिया हमने प्रिय युवा साथी को

भरे हुए हृदय से नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र; उदयपुर के युवा प्रकोष्ठ के अति सक्रिय सदस्य, माधुर्य, आत्मीयता, समर्पण, कर्मनिष्ठा और नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र को उच्च सोपनो तक ले जाने की प्रबल भावना जिनके हृदय में रची बसी थी ऐसे हमारे प्रिय मित्र सुकृत मेहरा १५ जून २०२५ को हम सबको, परिजनों को, एक स्थाई टीस देकर, इस नश्वर शरीर को छोड़कर चले गए।

मात्र ४० वर्ष की आयु में अपने व्यवहार से सुकृत ने सबको अपना बना लिया था। यथा नाम तथा गुण, उन्होंने जो कुछ किया वह अच्छा ही किया। जहाँ तक आर्य समाज की बात है गत लगभग २ वर्षों से हमने यह प्रयास किया कि आर्य परिवारों के जो युवा सदस्य हैं वे सब सक्रिय रूप से वैदिक संस्कृति के प्रचार के कार्यक्रमों में जुड़े और इस अत्यन्त सफल प्रकल्प की धुरी के रूप में प्रिय सुकृत थे। अपार हानि हुई है उनके जाने से इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु इस दुःख को सहने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है। NMCC YOUTH के बाकी सभी सदस्य संकल्पित हैं कि सुकृत ने NMCC को नवीन आयाम देने के लिए जो सोचा था उसे पूरा करेंगे। परमपिता परमात्मा के श्री चरणों में निवेदन है कि वह दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और परिजनों एवं हम सबको वह धैर्य, शक्ति प्रदान करें कि हम इस वियोगजन्य पीड़ा को सहन कर सकें और उनके शेष कार्यों को पूरा करने में सफल हो सके। **- अशोक आर्य एवं NMCC YOUTH के सभी सदस्य**

आर्यजगत् में शोक की लहर

आर्य जगत् के प्रख्यात् उदारमना दानी, उद्योगपति माननीय श्रीमान् शिवकुमार चौधरी जी (चेयरमैन प्रतिभा सिन्टैक्स) अब हमारे बीच नहीं रहे। १७ जून २०२५ को सुबह २:३३ बजे उन्होंने अन्तिम सांस ली। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार दिवंगत आत्मा को अपनी भवाभीनी श्रद्धांजली प्रेषित करता है।

महर्षि वाल्मीकि प्रणीत प्रामाणिक राम चरित्र

भगवान श्री राम का प्रामाणिक जीवन चरित्र

प्रक्षेपों का सप्रमाण निराकरण

तर्क, बुद्धि, विज्ञान और इतिहास के आधार पर जानें, माने और अनुसरण करें भगवान श्री राम के पावन चरित्र का

Order Now Free Postage

Best seller from Acharya Prembhikshu

Hard Bound ₹320 Paper Back ₹250

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, गुलाब बाग, उदयपुर

Contact 9314535379

आत्म निवेदन

युद्ध की अनिवार्यता बनाम विभीषिका

कोई युग ऐसा नहीं है जब युद्ध नहीं हुए हैं। राष्ट्र के साथ युद्ध की स्थिति कभी न कभी अनिवार्यतः आती है। प्रजा की रक्षा और समृद्धि के लिए युद्ध अनिवार्य हो जाते हैं इसीलिए निर्देश हैं कि राष्ट्र को सैन्य शक्ति को उच्चतम सोपान पर रखना चाहिए। यजुर्वेद में कहा है-

अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजय स्पृधः॥ - यजुर्वेद १९/७१

इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य से आच्छादित भी मेघ बारम्बार उठता है, वैसे ही वे शत्रु भी बारम्बार उत्थान करते हैं। वे जब तक अपने बल को न्यून और दूसरों का बल अधिक देखते हैं, तब तक शान्त रहते हैं। इसलिए शत्रु की इसी प्रवृत्ति पर किसी भी राष्ट्राध्यक्ष को पैनी निगाह रखनी चाहिए।

जहाँ तक भारत के चिरपरिचित दुश्मन राष्ट्र पाकिस्तान का प्रश्न है, वह तो इस प्रवृत्ति का बादशाह है। कितने युद्ध लड़े, सभी में मुँह की खाई, परन्तु अपनी हरकतों से बाज नहीं आता। अब ऑपरेशन सिन्दूर ने तो उसके और उसके मित्र देशों के घमण्ड को चूर-चूर कर दिया है, परन्तु वह अपने लोगों के सामने न सिर्फ अपनी जीत की घोषणा कर रहा है बल्कि अपने सेना प्रमुख को फील्ड मार्शल घोषित कर दिया, ताकि उसकी जनता यह समझे कि यह जीत का पुरस्कार है।

युद्ध को लेकर अनेक विद्वानों की सहमति नहीं है जो कि स्वाभाविक है। युद्ध के सर्वग्रासी चरित्र को रेखांकित करते हुए प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था- 'मैं नहीं जानता कि तृतीय विश्व युद्ध किन हथियारों से लड़ा जाएगा, लेकिन चौथा विश्व युद्ध लाठी और पत्थरों से लड़ा जाएगा।'

जॉन स्टीनबेक, अमेरिकी लेखक, नोबल विजेता कहते हैं- सभी युद्ध एक विचारशील प्राणी के रूप में मनुष्य की असफलता का लक्षण हैं।

तो मार्गरेट एटवुड, कनाडा की लेखिका कहती हैं - जब भाषा विफल हो जाती है, तब युद्ध होता है।

युद्ध की विभीषिका का साक्षी इतिहास है,
क्या समर से हुआ कभी मानव का विकास है ?
वसुन्धरा पर जब-जब गूँजा रणभेरी का नाद है,
मिटी सभ्यता, समूल नाश का हुआ शंखनाद है॥

ऊपर लिखे का यदि हम विश्लेषण करें तो इस परिणाम पर पहुँचते हैं- कि युद्ध एक ऐसी विभीषिका है जो समस्त

प्रगति को वर्षों पीछे धकेल देती है। फिर भी युद्ध अन्तिम उपाय के रूप में कर्त्तव्य बन जाता है। तब इससे पीछे हटना अधर्म है।

ऑपरेशन सिन्दूर के बाद भारतवर्ष में अनेक लोगों का यह मत है कि भारत को युद्ध विराम नहीं करना चाहिए था पाकिस्तान का समूल नष्ट कर देना चाहिए था। इस बात को लेकर इतना हंगामा है कि पाकिस्तान पर अभूतपूर्व विजय की प्रसन्नता इन्हें क्या तनिक भी नहीं है? यह सन्देह होने लगता है।

युद्ध विराम नहीं होना चाहिए, यह हमारे मत में एक अति उत्साहित राय है जो ना तो उचित है और ना शायद सम्भव है। इतिहास पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो रूस और अमेरिका की अफगानिस्तान में उपस्थिति को हम देख लें अथवा अमेरिका और वियतनाम की लड़ाई को देख लें। इतने शक्तिशाली देश होते हुए भी क्या वह क्रमशः अफगानिस्तान और वियतनाम को नष्ट कर पाए? नहीं। अभी देखें इजरायल और फिलीस्तीन के युद्ध को रूस और यूक्रेन के युद्ध को। रूस के सामने यूक्रेन क्या है और इजरायल के सामने हमास क्या है? कुछ भी नहीं। परन्तु रूस के युद्ध को ३ वर्ष और इजरायल युद्ध को सम्भवतः २ वर्ष होने जा रहे हैं।

देश छोटा हो या बड़ा, कमजोर हो या शक्तिशाली युद्ध में नुकसान कम या अधिक, होता दोनों पक्ष को है। शक्तिशाली राष्ट्र हानि से अछूता रहेगा यह दिवास्वप्न मात्र है। रूस के समक्ष यूक्रेन पिद्दी सा देश है, पर अभी उसने जो आक्रमण किया और चालीस पचास हजार रुपये के ड्रोनों का उपयोग कर रूस को करोड़ों हजार डालर की चोट तो दी ही उसे भारी शर्मिंदगी भी उठानी पड़ रही है। एक व्यापक और महाविनाशक युद्ध की सम्भावना बन रही है ऐसा प्रतीत हो रहा है। युद्ध की विभीषिका के पश्चात् की स्थितियाँ राष्ट्र को इस प्रकार प्रभावित करती हैं कि उसे सामान्य होने में भी वर्षों लग जाते हैं और उसकी प्रगति चाहे वह आर्थिक हो चाहे सामाजिक, वर्षों पीछे चली जाती है। क्या ऑपरेशन सिन्दूर के क्रम में युद्ध विराम विरोधी ऐसा चाहते है?

आप महाभारत के युद्ध को ले लें १८ दिन तक चले इस युद्ध में कहा जाता है ३५ लाख से ऊपर योद्धा मारे गए और बाद में बचे केवल और केवल १८। इसका भीषण परिणाम भारतवर्ष ने झेला। जिस भारत की ओर विदेशी लोग आँख उठाकर के भी नहीं देखते थे उन्होंने इस पर आक्रमण किए, अन्दर घुस आए। शक, हूण, और न जाने कौन-कौन। महाभारत के युद्ध के पश्चात् वर्ण संकरता ने पैर पसार लिए। इसके अनेक सामाजिक दुष्परिणाम हुए। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में लिखा- 'ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अब तक भी यह अपनी पूर्व दशा में नहीं आया। क्योंकि जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने में क्या सन्देह?'

विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।

यह किसी कवि का वचन ठीक है कि- जब नाश होने का समय निकट आता है तब उलटी बुद्धि होकर उलटे काम करते हैं। कोई उनको सूधा समझावे तो उलटा मानें और उलटी समझावें उसको सूधी मानें। जब बड़े-बड़े विद्वान्, राजे, महाराजे, ऋषि, महर्षि लोग महाभारत युद्ध में बहुत से मारे गये और बहुत से मर गये, तब का विद्या का और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट होता चला। ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान आपस में करने लगे। जो बलवान् हुआ वह देश को दाब कर राजा बन बैठा। वैसे ही सर्वत्र आर्यावर्त्त देश में खण्ड-बण्ड राज्य हो गया। पुनः द्वीप-द्वीपान्तर के राज्य की व्यवस्था कौन करे? (सत्यार्थ प्रकाश)

इसमें कोई दो मत नहीं है कि युद्ध अन्तिम उपाय है तो दूसरी ओर यह भी सत्य है कि एक राष्ट्र के नाते जब आपकी धमक पूरे संसार में होती है तभी आपकी बात मानी जाती है। तुलसीदास जी ने सही कहा 'भय बिन प्रीत न होय' राष्ट्र की प्रबल सैन्य शक्ति अन्य राष्ट्रों में भय पैदा करती है। जिसके कारण वह हमारे प्रति कोई भी अपराध करने से विरत् रहते हैं। परन्तु हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान को क्या कहिए। जब प्रत्यक्ष युद्ध में उसको सदैव हारना पड़ा, तो उसने अप्रत्यक्ष युद्ध की नीति बना ली। आतंकवादियों को प्रवेश कराके निरपराध लोगों की हत्या उसको संतोष पहुँचने लगी। उसने सोचा भी न था कि पहलगाम का बदला भारत इस प्रकार से लेगा।

इस युद्ध में भारत का कोई नुकसान विशेष नहीं हुआ। इसी कारण से सम्भवतः लग रहा है कि अभी युद्ध को लम्बा चलना चाहिए था। हमें यह एक मनोरंजक खेल सम्भवतः लग रहा था। हम यहाँ सीमा रेखा से दूर बैठकर युद्ध विराम की आलोचना कर सकते हैं परन्तु पुंछ में अपनों को खोने वाले परिवारों से पूछिये? वे युद्ध विराम का स्वागत करेंगे? हमें स्मरण रखना होगा कि कारगिल युद्ध में ५०० सैनिक शहीद हुए थे और साजो-सामान की तो बात करें तो कोई गिनती नहीं। आप कितने भी ताकतवर हैं आपको नुकसान होता ही है। अतः हमारे मत में जिस उद्देश्य को लेकर के ऑपरेशन सिन्दूर किया गया था वह था आतंकवादियों के अड्डों को नष्ट करना और भारतीय सेना ने उनको बर्बाद कर दिया। अभी एक साक्षात्कार में CDS जनरल अनिल चौहान ने बताया कि हमने पाक को सूचित कर दिया था कि हमने अपना काम कर दिया है। अगर वे शान्त बैठेंगे तो भारत भी शान्त रहेगा। अर्थात् इसके बाद अगर पाकिस्तान आक्रमण न करता तो भारत का भी आगे आक्रमण करने का कोई इरादा नहीं था। जिस सीमित उद्देश्य के लिए सीमित ऑपरेशन किया गया वह पूरा हो गया था। अतः गम्भीरता से अगर विचार करेंगे तो लगेगा कि युद्ध विराम ठीक ही हुआ।

अब पाकिस्तान और उसके समर्थकों को भी हमेशा सोचना पड़ेगा कि भारत पर किसी भी प्रकार का आतंकवादी हमला अगर हुआ तो भारत अपनी घोषणा के अनुसार उसे युद्ध की कार्यवाही मानकर उसकी सशक्त प्रतिक्रिया देगा।

हमने ऊपर महाभारत युद्ध की बात की। भगवान कृष्ण क्या नहीं जानते थे कि महाभारत युद्ध का क्या परिणाम होगा? विराट नगर में जब संजय हस्तिनापुर के दूत बन युधिष्ठिर के पास जाते हैं तब युद्ध एवं शान्ति को लेकर उनके व युधिष्ठिर के मध्य रोचक संवाद हुआ। संजय युधिष्ठिर से कहते हैं कि- 'युद्ध जैसे कार्य को जिसमें पूरी तरह सबका विनाश हो, पाप कर्मों का उदय हो, जो नरक का द्वार है, जिसके पश्चात् अभाव ही शेष रहता है, जिसमें जय और पराजय दोनों की सम्भावना है उसे कौन व्यक्ति अच्छी तरह से जानते हुए भी करेगा?'

युधिष्ठिर उत्तर देते हैं- 'शान्ति, युद्ध से निश्चित ही महिमा वाली है। यदि शान्ति का अवसर मिल जाय तो कौन युद्ध करेगा? ... इसलिय बिना युद्ध किये यदि थोड़ी भी वस्तु मिल जाती है तो वह युद्ध करके प्राप्त होने वाली अधिक वस्तु से अधिक महान् है। फिर मनुष्य युद्ध का विचार क्यों करे? परन्तु शान्ति प्रत्येक परिस्थिति में ठीक नहीं होती। यदि तुम प्रत्येक परिस्थिति में शान्ति को ही ठीक समझते हो तो यह बताओ की राजाओं के द्वारा युद्ध करने से धर्म की रक्षा होती है या उनके द्वारा युद्ध को छोड़कर भाग जाने से धर्म की रक्षा होती है?'

जब विधाता के प्रकोप से कोई क्रूर मनुष्य शक्ति का संग्रह करते हुए दूसरे की सम्पत्ति को लेने की इच्छा करने लगे वहाँ राजा को उस लुटेरे के वध से पुण्य प्राप्त होता है।

और इसीलिए युद्ध टालने के लिए श्रीकृष्ण ने अन्तिम समय तक पूरा प्रयास किया। अन्तिम शान्ति प्रस्ताव लेकर के जब वे विराटनगर से कौरव सभा में गए तो उन्होंने कहा कि- 'पाण्डवों को केवल पाँच गाँव ही दे दे।' यह अन्याय के समक्ष झुकना तो कहा जाएगा, क्योंकि विराट नगर में १३ वाँ अज्ञात वर्ष सफलतापूर्वक पूरा कर लेने के पश्चात् प्रतिज्ञा के अनुसार दुर्योधन को एवं धृतराष्ट्र को पूरा का पूरा पाण्डवों का राज्य लौटाना था, उसने नहीं लौटाया। यह अन्याय था। धर्म व्यवस्था इस सम्बन्ध में स्पष्ट है और यह भगवान श्रीकृष्ण को भी पता था कि अन्याय करने वाले को दण्ड मिलना चाहिए परन्तु बात वही थी कि सर पर खड़ा तो युद्ध था। उसमें कितनी बड़ी हानि होनी थी, यह श्रीकृष्ण जी

समझते थे। इसीलिए वे सन्धि के लिए गए। परन्तु जब समस्त वरिष्ठों के होते हुए, भीष्म के होते हुए, द्रोण के होते हुए दुर्योधन ने कह दिया कि- 'मैं सुई की नोक के बराबर भी राज्य नहीं दूँगा, जमीन नहीं दूँगा' तो फिर अन्तिम उपाय युद्ध ही रह जाता है। फिर यह धर्म युद्ध बन जाता है, फिर यह न्याय युद्ध बन जाता है। फिर इस पर आगे-पीछे सोचना वीरों को शोभा नहीं देता। फिर युद्ध और उसमें विजय यही प्राप्त करने योग्य रह जाता है। इसीलिए जब यह निश्चय हो गया कि युद्ध होना है उस समय अर्जुन के विचलन को मोहग्रस्त माना गया और गीता के रूप में भगवान कृष्ण ने जीवन दर्शन को अर्जुन के समक्ष रखते हुए कठोर वास्तविकता से अवगत कराया कि अब कोई न अपना है न पराया है, जो सामने आपको नष्ट लेकर करने के लिए खड़ा है वह दुश्मन है, और उसको नष्ट करना आपका धर्म है।

युद्ध को लेकर एक संतुलित व स्पष्टता रखने वाला शासन ही अपने राष्ट्र को सही दिशा दे सकता है यह हमारा मत है, और सौभाग्य से भारत का आज का नेतृत्व इसमें सक्षम दिखायी देता है।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

❑❑❑

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे।

निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

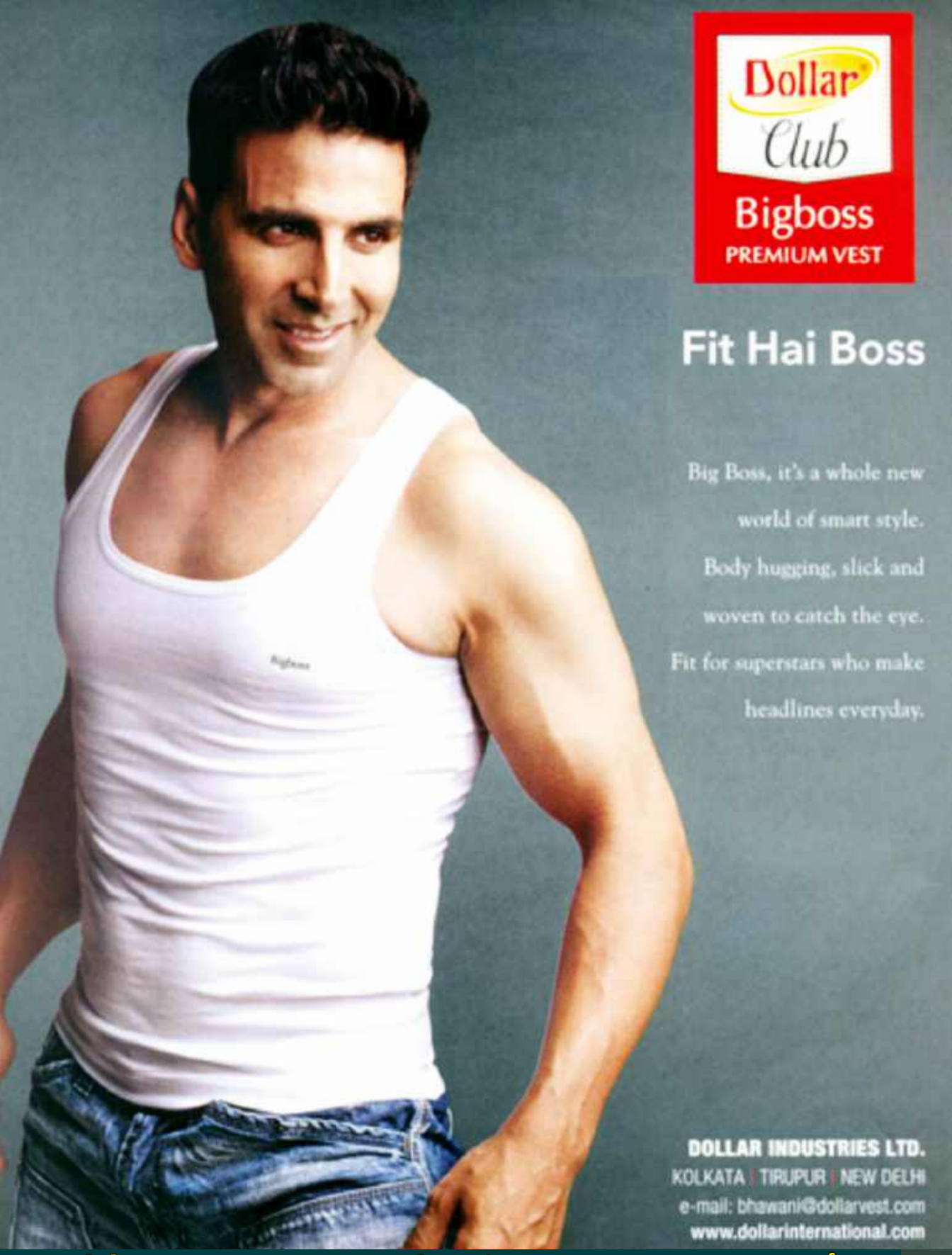

Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new
world of smart style.
Body hugging, slick and
woven to catch the eye.
Fit for superstars who make
headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 July-2025 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

जब तक वादी-प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद वा लेख न किया जाय, तब तक सत्याऽसत्य का निर्णय नहीं हो सकता। जब विद्वान् लोगों में सत्याऽसत्य का निश्चय नहीं होता, तभी अविद्वानों को महाअन्धकार में पड़कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है। इसलिये सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो।

- सत्यार्थप्रकाश अनुभूमिका (२) पृष्ठ १६

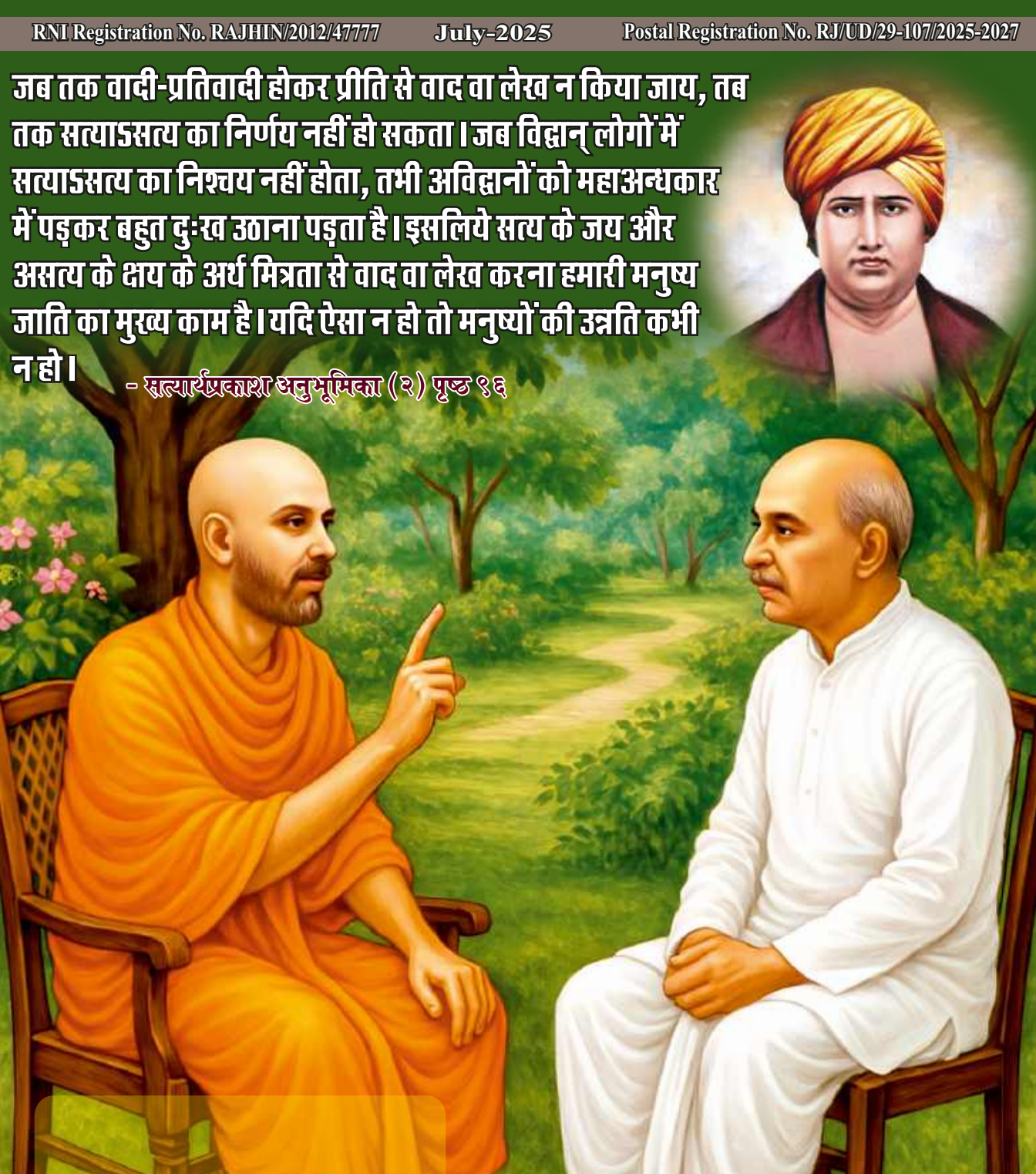

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर